मासिक—

मानव मन्दिर

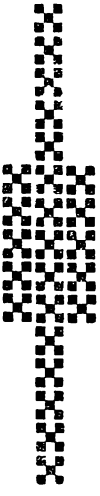

सम्पादक : एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटार्यड)

वर्ष ६ | शुक्रवार १० अगस्त १९७९ | संख्या ४

घूंघट के पट

सत्संग परमसंत परमदयाल
फकीरचन्द जी महाराज
मानवता मंदिर
होशियारपुर ।

दिनांक 13-4-79

राधास्वामी । मुझे याद आता है कि जब मैं नौ दस वर्ष का था तो एक शब्द गाया करता था और कई बार इस गाने से मुझे मेरे बाप से थप्पड़ भी पड़े थे ।

आई वैसाखी धुम्मां पईयां सौदागर घरीं आये नी ।
सईयां ने रल मिल पैठे सीस अपने गुंदाये नी ।
कोई हिदायत खबर ले आवे केहड़ा कासद जाये नी ।

अब मैं तरयानवे साल का हो गया । मैं, उस मालिक जो आधार है, उसका कोई नाम नहीं, सब

नाम उसके हैं, जैसा किसी का विश्वास है, वैसा वह उसे याद करता है, उससे प्रार्थना करता हूं कि ऐ परमतत्व आधार, दाता दयाल ! आपने मुझे यह काम दिया था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैं चालीस साल से काम करता आ रहा हूं, मुझे पता नहीं कि मैंने अपने जीवन में ठीक किया है या ग़लत किया। आप लोग दूर दूर से आये हैं। मैं आपके आने को महसूस करता हूं यद्यपि मैं यह जानता हूं कि आप लोग सिवाय विशेष विशेष आदमियों के, हकीकत असलियत और सच्चाई जानने के लिए नहीं आये। कोई तमाशा देखने के लिए आया, कोई प्रेमवश आया और किसी को कोई सांसारिक दुख है, वह आया।

मैं जिस चीज़ की तलाश करता था, मेरे अन्तर ही नहीं सबके अन्तर एक (Craving) है। आदमी के अन्तर कोई ऐसी चीज़ है जो कुछ चाहती रहती है, कोई संसार चाहता है, कोई स्त्री चाहता है, कोई मुक्ति चाहता है, कोई भक्ति चाहता है और कोई नाम चाहता है। मेरे अहो भाग्य हैं कि मेरी Craving उन सत्संगियों के कारण दूर हुई जिन्होंने

अपने निजी अनुभव मुझे बताये कि मैंने उनकी सहायता की। मैंने जो कुछ भी कहा, वह अपने निजी अनुभव से कहा और शिक्षा को बदल चला हूं।

जिस मालिक की मुझे तलाश थी, मैं अभी तक वहां नहीं ठहर सकता। सच्ची बात कहता हूं। मगर मैं उस जगह और अवस्था को जान गया, समझ गया और कभी कभी वहां ठहरता हूं। उस जगह की बाबत कबीर साहिब का शब्द सुनाता हूं।

घूंघट के पट खोले रे, तोको पीव मिलेंगे।

पहली शर्त तो यह है कि जो उसे मिलना चाहता है, वह कटु बचन नहीं कहेगा। जब तक वह कटु बचन बोलता रहेगा, वह उस दर्जे को प्राप्त नहीं कर सकता। तुम गृहस्थी हो, बताओ, तुम्हारे घरों में हर रोज़ झगड़े नहीं होते? स्त्री पति को ऊट पटांग कह देती है, पति पत्नि को ऊट पटांग बोल देता है, लड़का बाप को कुछ कह देता है, बाप लड़के को कुछ कह देता है। जब तक किसी के मन की यह दशा है, वह कटु बचन बोलता है, वह चाहे बाबा फकीर नहीं, सारी दुनियां के बनाने वाले का चेला बन जाये, हज़ार नाम लेले, उसको वह चीज़

नहीं मिल सकती। एक तो कबीर साहिब के कहने अनुसार और एक मेरे अपने निजी अनुभव के आधार पर मैं यह कहता हूं।

उस चीज़ को प्राप्त करने के लिए जब तक घूंघट नहीं खुलेंगे वह चीज़ प्राप्त नहीं होगी। वे घूंघट क्या हैं? जो हमारा Self है, असल में जो फकीरचन्द है या जो असल में तुम हो, उसके ऊपर ग़िलाफ हैं। वे ग़िलाफ क्या हैं? कबीर साहिब का क्या भाव है, वह घूंघट किस चीज़ को समझते हैं, मुझे पता नहीं। मैं घूंघट किस चीज़ को समझता हूं? शरीर और मेरे मन के सारे विचार, चाहे वे परमार्थ के हैं चाहे वे स्वार्थ के हैं अर्थात संसार के हैं। मेरे ये घूंघट कैसे खुले? पहले तो बचपन से ही विचार था कि यह संसार नाशवान है, कोई अपना नहीं। पहली स्त्री पिंड दादन खान (इस समय पाकिस्तान में) हस्पताल में रह कर मर गई। वैराग्य हो गया। गरीबी थी, बाप सिपाही था। बाप का स्वभाव कठोर था। तनिक सी भूल हुई नहीं कि थप्पड़ पड़े नहीं, इससे मुझे और वैराग्य हुआ। प्रकृति

मुझे अच्छाई या बुराई से, पता नहीं दाता के चरणों में ले गई। अगर मैं स्वयं पहले इन सन्तों की किताबें पढ़ता तो मैं हरगिज़ सन्तमत में न जाता। क्योंकि इन्होंने किसी धर्म, पंथ, किसी ख्याल वाले को पूरा नहीं कहा बल्कि सबका कण्डन किया है। कबीर साहिब कह गये कि दत्तात्रेय नहीं पहुंचा, स्वामी जी ने कह दिया प्राशर नहीं पहुंचा, व्यास नहीं पहुंचा, वेदान्त, सूफीवाद तथा इसलाम सबका खण्डन कर गये। जब मैं एक दृश्य द्वारा दाता दयाल के चरणों में गया था और आगे मुझे यह राधास्वामीमत या सन्तमत मिल गया तो मैं अन्तर बैठ कर रोया करता था और मालिक से प्रार्थना किया करता था कि मालिक! मैं तो तुझे मिलना चाहता था। मैं कहां फंस गया जहां इन्होंने सबकी ऐसी तेसी फेरी हुई है। मगर दाता दयाल से मेरा विश्वास नहीं टूटा क्योंकि मैं उनको अपने दृश्य द्वारा परमतत्व का अवतार समझकर गया था और क्योंकि उन्होंने मुझे यह पंथ दिया था इसलिए मैंने उस समय प्रण किया था कि जो कुछ इस जीवन में सफर करके मेरा अनुभव होगा, मैं संसार को बता जाऊंगा।

इसके अतिरिक्त दाता दयाल ने मेरे जिम्मे तीन कर्तव्य लगाये कि निबल, अबल अज्ञानी जीवों की सहायता करना, भवसागर से पार करना और जगत कल्याण करना।

जो आदमी उस घर जाना चाहता है उसके लिए पहली शर्त यह है जो कबीर साहिब ने कहा है।

"कुटक बचन मत बोल रे"

तुम लोग इतना इतना खर्च करके हैदरबाद, गाजीपुर, लखनऊ, कानपुर अर्थात दूर दूर से आये हो। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीरचन्द! तूने यह मकड़ी का जाला क्यों बनाया? ये मेरे खोटे कर्म थे। क्योंकि मैं जानता हूं कि जो कुछ मैं कहना चाहता हूं संसार को इसकी अवश्यकता नहीं। मेरे पास तो जितने आदमी आते हैं, कोई संसार, कोई धन और कोई कुछ चाहता है। वे यह भूल जाते हैं कि यह संसार तो सराय है। कोई दस साल, कोई पचास साल और कोई सौ साल के लिए आया। यह देश हमारा नहीं है। यही दाता मुझे लिखा करते थे।

यह तौ नहीं तेरा देश, देश है वेगाना।
यहां सब बेगाने बसें, कोई नहीं यगाना।
गुरु ने तुझे उपदेश दिया और तुझे चिताया।
सन्तमत पंथ धार हिये कटे मोह माया।

यह मेरी मोह माया नहीं कटती थी। एक आदमी मोहवश अपने लड़के से प्यार करता है, स्त्री से प्यार करता है और एक आदमी गुरु से, फकीर-चन्द से प्यार करता है। मोह में कहां अन्तर आया ? कोई पुत्र के मरने पर रोया, कोई स्त्री के मरने पर रोया और कोई गुरु के मरने पर रोया। मैं पूछता हूं इसमें अन्तर क्या है ? गुरु मानव का नाम नहीं है। कबीर साहिब जिन्होंने पंथ चलाया था जो आदसन्त थे, वह कहते हैं।

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिए अन्ध।
दुखी होयें संसार में आगे यम का फंद।
गुरु किया है देह को सतगुरु चीन्हा नाहीं।
कहैं कबीर ता दास को तीन ताप भरमाई।

गुरु एक है उसका नाम ज्ञान, अनुभव, विवेक और प्रेम है लेकिन आजकल क्या है ? तेरा गुरु कौन

है ? फकीरचन्द। तेरा गुरु कौन है ? अमुक। तेरा गुरु कौन है ? अमुक। मैं यह साफ बात क्यों कहता हूं ? जो लोग मुझे गुरु मानते हैं, उनको कहता हूं ताकि मेरी आत्मा पर कोई धोखा देही का पाप न आये। कबीर साहिब कहते हैं अगर तुम वहां जाना चाहते हो तो घूंघट के पट खोलो। पट खोलने से पहले शर्त यह है कि तुम्हारा कटु वचन न हो। प्रेम से रहो। जिस घर में मिआं बीबी की लड़ाई है, भाई भाई की लड़ाई है, माता पिता की लड़ाई है, इन पारटियों की लड़ाई है, कांग्रेस और जनता का झगड़ा है, जब तक यह नहीं जायेगा विनाश अनिवार्य है और झगड़े इस देश से कभी नहीं जा सकते ! नहीं जा सकते !! नहीं जा सकते !!! इस वास्ते मैंने इस भेद को खोल दिया जिसको कबीर साहिब ने धर्मदास को बताया।

धर्मदास तोहे लाख दुहाई।
सार भेद बाहर नहीं जाई।

मैंने यह सार भेद खोल दिया। स्वामी जी ने भी कहा :-

सन्त बिना कोई भेद न जाने।
वो तोहे कहैं अलग में।

इससे हानि भी है कि जो छोटी बुद्धि वाले हैं उनके अज्ञान का विश्वास टूटता है। मगर इसने तो आज भी टूटना है और कल भी टूटना है। तुम झूठ को कब तक छुपाते रहोगे। एक झूठ बोलोगे तो उसे सिद्ध करने के लिए सौ झूठ और बोलोगे। मैं तो चकित हूं कि जो कुछ मेरे साथ बतौर गुरु हुआ, अगर यह ठीक है कि यही पिछले और मौजूदा सब गुरुओं के साथ बीता है और इन्होंने गुरु के रूप को पब्लिक को साफ नहीं बताया और हमें मूर्ख बनाकर लूटा है तो ये दोषी हैं। मैं यह निर्भय होकर कहता हूं। अगर मैं ग़लत कहता हूं तो हर आदमी को अधिकार है कि वह मेरा खण्डन करदे। मैं कोई दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है।

वे घूंघट के पट क्या चीज़ हैं ? शरीर को भूल जाना, मन के सारे विचारों को भूल जाना। मैं इन्हें वा दाता दयाल के रूप को नहीं भूल सकता था। उसे दूसरा समझता था मुझपर यह दशा आप लोगों

ने की, जिन्होंने मुझे बताया कि मेरे रूप ने उनकी सहायता की। इस एक विचार ने मेरे मन के विचारों का घूंघट खोल दिया। जब से मुझे मन के रूप का पता लग गया तब से मन को छोड़ जाता हूं।

मगर आप संसारी हैं। आप घूंघट के पट को खोलना नहीं चाहते आप लोग तो इस घूंघट में आनन्द लेना चाहते हैं। इस वास्ते दो प्रकार की शिक्षा हो गई। एक इस घूंघट में रहते हुये खुशी का जीवन व्यतीत करना और एक इस घूंघट को उतार-कर सदा के लिए अपने आपमें चले जाना। अगर मैं सारी ही आध्यत्मिकता की बात कहूं वो ये मातायें और सर्वसाधारण क्या समझेंगे। जब तक तुम्हारा समय नहीं आया तब तक घूंघट अर्थात मन के विचारों में रहो मगर अच्छा घूंघट रखो, घूंघट को अच्छा बनाओ। आप आगे नहीं जाते कोई परवाह नहीं। हर चीज़ का समय है। घूंघट को ठीक रखने का क्या भाव है? वेद मार्ग। शिव सकल्पं अस्तु। अच्छा विचार रखो। मन है तो घूंघट है। मुझे तो अब इसका विश्वास है।

जब तक इन्सान का सदाचार ठीक नहीं है, तुम कटु बचन नहीं छोड़ते, तुम्हारे घूंघट कैसे कटेंगे। भाषण देना एक और बात है। किसी समय मैं गिर जाता हूं अर्थात किसी समय मेरे मस्तिष्क में ऐसा विचार आता है जिसको मैं नहीं चाहता। जिस आदमी की ज़बान ठीक नहीं है, जिसके मन में प्रेम नहीं है, दिल में शत्रुता रखता है, किसी से घृणा द्वेष रखता है वह इस घूंघट को नहीं खोल सकता। जब तक उसे यह ज्ञान नहीं कि मेरे मन के अन्तर से जो कुछ निकलता है, यह कल्पित और माया है। है नहीं परन्तु भासता है, तब तक वह इस घूंघट को नहीं खोल सकता। अब अमल करना तुम्हारा काम है।

धन जोबन का गर्भ न कीजै झूटा पचरंग चोल रे।

एक शर्त तो यह है। जो आदमी उस मालिक को मिलना चाहता है अर्थात अपने घर पहुंचना चाहता है उसके लिए ये शर्तें आवश्यक हैं।

सुन्न महल में दियना बार रे आसा से मत डोल रे।

वह कहते हैं सुन्न महल में जहां मन सकंल्प नहीं करता आसा से मत डोल। क्या भाव ? कोई आस न कर। बुरा तो नहीं मानोगे ! सब संसार

भक्ति करता है, पीछे से क्या कहता है ? ऐ मालिक ! मेरा अमुक काम हो जाये, मुझे धन मिल जाये। मान मिल जाये। आप बताओ ? तुम्हारे दरवाजे के सामने यदि कोई भिखारी आता है, तुम पैसा दो पैसे या मुठ्ठी आटा दे दोगे। मगर उसका कोई मान नहीं करोगे, वह भिखारी का भिखारी रहेगा। इस प्रकार तुम्हें बताये देता हूं कि हम जितने आदमी ईश्वर परमात्मा या गुरु की भक्ति करते हैं और कुछ चाहते हैं, कि हमारे लड़का हो जाये और हमारे यह हो जाये। हम और तुम कौन हैं ? हम भिखारी हैं। भिखारी का संसार में क्या मान। इस लिए जो अपने इष्ट को इस लिए प्रेम करते हैं कि उन्हें संसार की कोई वस्तु मिल जाये, वे भिखारी हैं। मैंने दाता दयाल से अपने जीवन में दो बार के सिवाय कभी संसार की चीज़ नहीं मांगी। एक बार लड़की के लिए वर नहीं मिलता था तब उनसे कहा या जब मेरा एक लड़का मर गया तो मेरी स्त्री दो साल तक रोती रही, उस समय मैंने प्रार्थना की कि महाराज ! अब कुशलता रहे। क्योंकि याद रखना, जिस घर

में स्त्री के आंसू बहते हैं उस घर में शान्ति नहीं आती ।

जोग जुगत से रंग महल में पिया पाये अनमोल रे।

मैंने जितना बोला है, अगर इस पर ही तुम इकट्ठे बैठकर विचार करो तो तुम्हारे जीवन बदल । विचार करो और अपने अमल को ठीक करो ।

याद रखो, शब्द और अभ्यास ने तुम्हें पार नहीं करना बल्कि शब्द और अभ्यास करने के बाद तुम्हें किसी सत्गुरु ने पार करना है । शब्द और अभ्यास अन्तिम अवस्था नहीं है यह केवल मन को ठहराने, इकट्ठा, करने, मन की चंचलताई को दूर करने और ज्ञान प्राप्त करके लिए है । सबसे बड़ी खुशी यह है कि इन्सान अपनी ज़ात में मिल जाये ।

End of Sadhna is the realization of self.

संतों का मार्ग तो केवल निवृति मार्ग है ताकि हम इस संसार से निकल जायें और फिर हमारा आवागवन अर्थात जन्म न हो । संतों की जितनी शिक्षा है अगर उन्होंने खण्डन किया है तो इस भाव से किया है । मगर सभी को अध्यत्मिकता की

आवश्यकता नहीं है। इस लिए मैं अध्यत्मिकता के लिए संकेत करता हूं। किसी को अध्यत्मिकता नहीं मिल सकती जब तक उसमें मानवता नहीं है। हमारें देश और घरों में अशान्ति है। इस समय हमारे देश और घरों में अशान्ति के घर बने हुये हैं। मेरे पास दुनियां दुखों के कारण आती है। किसी का लड़का अच्छा नहीं है, किसी की लड़की खराब है और किसी को कोई दुख है। इसका जिम्मेदार कौन है? हम आप हैं। मैंने इसकी खोज की है। इसके बारे मैंने पिछले सत्संग में बहुत कुछ कहा है। यह संसार संकल्पमय और मायामय है। जिस मकान की बुन्याद ठीक नहीं उस मकान की दीवारें अगर बनेंगी तो जल्दी गिर जायेंगी। इन्सान की बुनयाद क्या है? बुनयाद मां बाप हैं। जिस समय दोनों मां बाप आपस में मिलते हैं उनके जो विचार होते हैं वे उस बच्चे की बुनयाद बनती है। इस लिए अगर संसर में सुख चाहते हो तो संतान को संतान के विचार से पैदा करो अच्छी संतान पैदा करो।

तुम लोग अभ्यास पर ज़ोर मत दो। तुम्हे मैं साफ साफ कहता हूं अपने कर्म को ठीक करो। मैंने आज़माकर देखा है। मैंने एक लड़का संतान के विचार से पैदा किया। मुझे बचपन से लेकर आज दिन तक एक थप्पड़ मारना तो एक और रहा, ओए कहने का अवसर नहीं आया। वेज़वत होकर खुदरौ संतान पैदा मत करो। मैंने भी खुदरौ संतान पैदा की मगर उस समय मुझे पता नहीं था। मालिक ने मुझ पर बड़ी कृपा की कि वह मर गई। मैंने जब देखा कि बड़े बड़े महात्माओं का पिछला जीवन बहुत खराब रहा, संतान नालायक निकली, अपनी स्त्रियों से झगड़े रहे, कोई कैंसर से मरा, कोई T.B से मरा कोई सूली पर चढ़ा तो मैं सोचता हूं कि इन राम राम जपने वालों को कष्ट हुआ। ये महात्मा अभ्यास करने वाले अपने कर्मों के फल भोगने से न बचे। इन्हें इनके अभ्यास ने कोई लाभ नहीं दिया तो मैं कर्म को ठीक करने पर अधिक बल देता हूं। तुम गृहस्थी हो, जीवन व्यतीत करने के लिए तुम्हें इस शिक्षा की आवश्यकता है।

सब को राधास्वामी !

सत्संग परमसंत परमदयाल
फकीरचन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर
होशियारपुर।

दिनांक 14-4-79

राधास्वामी। मैंने प्रातः कबीर साहिब की बाणी पर बोला था। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं, फकीरचन्द! अगर तू झूठ बोलेगा या संतों की हां में हां मिलायेगा तो कुष्टी होकर मरेगा। तो तू बता तुझको पीव मिल गया ये जो बड़े बड़े संत महात्मा फिरते हैं, ये बतायें कि पीब क्या है? मैं सुनाम में स्टेशन मास्टर था। वहां साधुओं की बहुत मण्डलियें आईं। मैं हर एक मठाधीश के पास गया। एक-एक रुपया चढ़ाता गया और पूछता गया, महाराज! आपको राम मिल गया? सबने कहा हम कोशिश में लगे

हुये हैं। एक मंगलदेव स्वामी जो बगदाद में आर्य्य समाज की ओर से भाषण देने के लिये गया। मैंने कहा मैं समय लेना चाहता हूं। मैंने कहा मंगल स्वामी! एक बात का उत्तर दो, आपने जिस इच्छा के लिए संन्यास लिया है क्या वह पूरी हो गई? कहने लगा नहीं, मगर मैं कोशिश करता हूं।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि अगर तू सच्ची बात नहीं बताता जो तेरे साथ बीतती है तो तू दोषी है। तुमको पीव मिल गया? या यूं ही महन्त बनकर बैठा है और मकड़ी का जाला बनाकर लोगों को कहता फिरता है? मुझे पिया क्या मिला, मैं वह बताता हूं। दूसरों या कबीर साहिब को पीव क्या मिला, वे जानते होंगे। मुझे पता नहीं। मैं दाता दयाल को तंग किया करता था कि मुझे वे अपना पीव बताओ जो ये संत कहते हैं। उन्होंने यह काम दिया था और कहा था कि तुझे अन्तिम अवस्था पर पहुंचाने वाले सत्संगी लोग होंगे जो तुम्हें गुरु मानेंगे। तुम यह काम किया करो, प्रकृति तुम्हारी सहायता करेगी। अब जबसे मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप दूसरों के अन्तर प्रकट होता है, उनकी सहायता करता

है और उनके काम कर जाता है लेकिन मेरे बाप को पता नहीं होता तो मैं असलियत को समझने के लिए विवश हुआ। मेरी समझ में बात आ गई। मेरे रूप ने ऐसे ऐसे चमत्कार किये हैं जिन का कोई हिसाब नहीं। सेठ दुर्गादास हमारा प्रधान (President) था। मेरा 1919 का मित्र था। वह बीमार होकर चण्डीगढ़ हस्पताल में चला गया मैंने नारायण दास को भेजा कि जाकर खबर ले आओ। वह गया। उसे पूछा कि बाबा जी को कुछ कहना है ? उसने कहा क्या कहना है, बाबा जी तो मेरे पास बैठे हैं और मुझे बिल्कुल पता नहीं। कम-से-कम तीन सौ स्त्रियें मेरे सम्पर्क में आईं जिनके बच्चे नहीं थे। उनका बिश्वास था, प्रसाद ले गई, उनके बच्चे हो गये। उनमें चार स्त्रियें ऐसी थीं जिनकी आयु पचास पचास साल की थी और उन्हें मासिक धर्म नहीं आता था जबसे पैदा हुई थीं। उनके बच्चे हो गये। अगर मैं ही बच्चा देने वाला होता तो मेरी अपनी लड़की के विवाह को किये हुये चौबीस साल हो गये, कई बार प्रसाद दिया, उसके कोई बच्चा नहीं हुआ। क्या मैं देता हूं ? यह एक प्रश्न है। तो क्या समझ में

आया ? ऐ इन्सान ! जो कुछ है तेरा अपना विश्वास है और कुछ नहीं ।

क्योंकि मेरे जिम्मे ड्यूटी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना । मैं यह नहीं कहता कि जो कुछ मैं कहता हूं यह **Final** है । मैं सत्यप्रिय इन्सान हूं, **Researcher** हूं । जो कुछ मेरे साथ बीता मैं आपको वह कहना चाहता हूं । फिर घूंघट क्या हुआ ? एक घूंघट शरीर का और एक मन के विचारों का । जिस कदर भी हम अपने विचार करते हैं, यह सब क्या है ? सूक्ष्म प्रकृति है । जिसका शरीर और विचार जितना प्रवल है उसकी (**will power**) से उसका काम बनता है । यह बिल्कुल शतप्रतिशत सच्ची बात है । क्यों कहता हूं ? एक तो मेरे काम बनते हैं । जब मैं राम को पूजता था, तुलसीकृत रामायण पढ़ा करता था । मैंने बचपन में आरम्भ से लेकर अन्त तक सात बार रामायण पढ़ी है । मैं बागांवाला स्टेशन पर नौकर था, वहां भोग डालना था । जब अन्तिम कड़ी पढ़ी गई, वहां दो आर्य समाजी ओवरसीयर थे, जो पहाड़ से पत्थर निकलवाते थे । उस समय आर्य समाजियों को सनातनियों

से बड़ी भारी घृणा थी। अब तो नहीं करते वह ज़माना और था। वे राम कृष्ण अर्थात सबको गाली निकालते थे और खण्डन करते थे, उनके नीचे वहां तीन-सौ-साठ मज़दूर काम करते थे। उन्होंने मज़दूरों को सिखाया कि आज फक़ीरचन्द के हां रामायण का भोग है वहां आपको हलवा मिलेगा, चलो। मैं पाठ करके उठा तो मेरा भाई भगवान दास थाली में कुछ हलवा लाया। मुझे कहता है इतने आदमी हैं, कहां से हलवा लाऊंगा? मैंने कहा क्या मैंने इनको हलवा देने का ठेका लिया हुआ है? कपड़ा डालकर देते रहो, जब समाप्त हो जाये, कह देना कि भाई! हमारे पास नहीं है। वे तीन-सौ-साठ आदमी थे और बीस पच्चीस और थे। उन्होंने तीन तीन बार हवला लिया लेकिन हलवा समाप्त नहीं हुआ। मैंने पूछा अगर कोई और बाकी रह गया हो, वह भी लेले। अब कोई लेने वाला नहीं था। पीछे से थोड़ा सा हलवा बच गया। यह क्या था? देखो तुम्हें एक बात सच्चे दिल से कहता हूं, तुम एक जगह विश्वास करो। अगर तुम्हारा विश्वास सच्चा है और तुम्हारे काम पूरे न हों तो वेशक जहां तुम मेरी फोटो पर

फूल चढ़ाते हो जो इच्छा हो करना। जो कुछ तुम्हें मिलना है, मिल चुका है, मिलेगा यह तुम्हारा अपना ही विचार, कर्म और विश्वास (**Faith**) है। जबसे मुझे यह पता लग गया और समझ आई कि ये मन के खेल हैं तो अब मन से ऊपर जाने की कोशिश करता हूं

जब मैं मन को छोड़ गया तो आगे प्रकाश और शब्द Light और Sound है। प्रकाश और शब्द में रहकर मैं उस की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। उसका पता नहीं लगता। जब कभी दो या तीन महीने के बाद कोई ऐसी समाधि लग जाये तो क्या हो जाता है? न मुझे अपनी होश होती है, न खुदा याद आता है और न गुरु याद आता है। (Silence) कुछ पता नहीं कि मैं हूं भी या कि नहीं। तो मैंने क्या समझा कि जीवन क्या है?

"लव खुले और बन्द हुये यह राज़े जिन्दगानी है"

मगर जिनका Egoism अर्थात खुदी वा मैंपना नहीं जाता है वह समुन्द्र का बुलबुला समुन्द्र में नहीं मिलेगा। हममें I अर्थात "मैं" आई हुई है। किसी में शारीरिक "मैं", किसी में मानसिक "मैं", किसी

में अध्यात्मिक "मैं", किसी में self की मैं। जब तक "I" है वह नाना प्रकार के मण्डलों में जायेगा। यह मेरा भाव है जो मैं आपको कहना चाहता हूं। मगर आप इस शिक्षा के अधिकारी नहीं हैं। आप संसार चाहते हैं। संसार को चाहने के लिये मैं आपको नुक्ता बता देता हूं। करो या न करो, यह तुम्हारी इच्छा है। तुम्हारे विचार में बड़ी भारी शक्ति है। अपने विचार को ठीक रखो। आपको यह सत्संग सच्चे दिल से कराता हूं मेरे दिल में दर्द है। इस बास्ते मैंने "home peace" घर में शान्ति रखने की शिक्षा दी है। घर में शान्ति रखो। जिस घर में शान्ति नहीं हैं वह घर आज भी नष्ट होगा कल भी नष्ट होगा, कोई नहीं रोक सकता। अपने कर्म को ठीक रखो, कर्म प्रधान है। तुम जाग्रत में जो बिचार करते हो उसका फल तूम्हें अवश्य मिलेगा। इससे कोई नहीं बच सकता।

वह पीव क्या हुआ ? वह दशा है जहाँ अपनी हस्ती (Individuality) समाप्त होकर एक किसी हस्ती में मिल जाती है और उसे अपनी होश नहीं रहती। मगर मैं दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं

कहता हूं यही final है। यह (Research) है। मैं तुम लोगों के साथ सच्चाई से वर्ताव करना चाहता हूं। मैंने सदा अपने कर्म को ठीक रखने की कोशिश की है। मैंने इस जीवन में आकर क्या समझा कि मैं कौन हूं? मैं supermost consciousness का अर्थात चैतन का बुलबुला हूं। जिस प्रकार हमारे अन्तर अरबों कीड़े हैं, अगर एक कीड़ा यह चाहे कि मैं शरीर की दशा का ज्ञान प्राप्त कर सकूं तो नहीं कर सकता। इसी प्रकार कोई आदमी यह नहीं कह सकता कि मैंने प्रकृति के भेद को जाना है। जो कहता है उसका Egoism और खुदी है। मैंने जितना समझा आपको बता दिया।

मैं सन्त मण्डली को कहना चाहता हूं। मेरा अनुभव मुझे यह बताता है कि राम-राम जपने से इतना लाभ नहीं जितना इन्सान को अपने मन पर काबू करने की आवश्यकता है। धार्मिक संसार वाले मुझे इस बात पर काफर कहेंगे। अगर कहें तो यह उनका अधिकार है। मगर जब मैं देखता हूं कि बड़े-बड़े नामधारी, बड़े बड़े सन्त कहलाने वाले बुरी-बुरी मौत मरे। मैं कैसे मरूंगा, मुझे पता नहीं।

इस वास्ते Root cause को पकड़ो। Root cause मन है। लाख राम राम, राधास्वामी-राधास्वामी, या पांचनाम जपते रहो। अगर तुम्हारा मन तुम्हारे कंट्रोल में नहीं है तो तुम्हारा राम-राम जपना, अल्ला अल्ला करना या कुछ और करना कुछ अर्थ नहीं रखता। मैं सच्चो बात कहता हूं दाता दयाल की धाम उजड़ गई। अगर उनके पास कोई शक्ति थी तो वह अपनी धाम को क्यों उजड़ने देते। बड़े-बड़े संतों की संतान नालायक थी, अगर उनमें शक्ति होती तो अपनी संतान को ठीक कर लेते। कितने ही सन्तों की अपनी स्त्रीयों से नहीं बनी। मैं नाम नहीं लेना चाहता नहीं तो उन्हें क्रोध आयेगा। इन्सान को उसके कर्म, अमल ने पार पहुंचाना है न कि भाषण सुनने या भाषण देने से किसी को लाभ पहुंचेगा। क्योंकि इन्सान को इस संसार में शान्ति नहीं मिलती इसलिए शरन होती है। आदमी क्रियात्मिक रूप से उस समय शरणागत होता है जब उसे संसार की ठोकरें लगती हैं और अनुभव हो जाता है कि उसके अपने यत्न और पुरुषार्थ

काम नहीं देते। ज़बान से शरणागत होना और बात है।

यहां लाखों पैगम्बर, पीर और अवतार आये, संसार जैसा है वैसे का वैसा है। जिन्होंने बदलना है उन्होंने बदलना है। जिन्होंने नहीं बदलना है, तुम लाख उपदेश करते रहो उन्होंने नहीं बदलना है। यह सच्ची बात है जो मैंने आज़माई है। यह एक कर्म, खवत और भ्रम होता है। मुझे सत्संग कराने का खवत था और भी कई आदमियों को सत्संग कराने का खबत है।

मगर असलियत क्या है ? कभी अकेला बैठता हूं तो अपने अन्तर सोचता हूं, फकीरचन्द ! सच्च बता तुझे क्या मिला ? यह मिला कि जो कुछ मैंने सीखा, समझा, वह सब भूल रहा है। किसी शक्ति का खेल है वह खिलाता है। मैं यह समझता हूं कि मैं एक (Tool) था। फिर भी आप आये हैं। आपको यहां तक पहुंचने में शायद समय लगे। आप राम जपो या न जपो, किसी धर्म में शामिल हों या न हों केवल अपने मन को शुद्ध करने का यत्न करो। मेरा तरयानवे साल का यह अनुभव है।

गुरु नाम, ज्ञान, अनुभव और विवेक का है। जब मैं आप गुरु बना और जो कुछ मैंने समझा तो इन धर्मों से बिल्कुल उदासी आ गई। जीव का अपना ही अज्ञान उसे मारता है। पिछले ज़माने में सच्च कहने का दस्तूर नहीं था। कबीर साहिब ने भी कहा है।

धर्मदास तोहे लाख दोहाई।
सार भेद बाहर नहीं जाई॥

राधास्वामी दयाल ने भी कह दिया।

संत विना कोई भेद न जाने।
वह तोहे कहे अलग में।

आप लोग इस भेद के अधिकारी नहीं हैं। मैंने इस भेद को क्यों खोला? अब हमारा अपना राज्य है। जब तक यह सन्तों की सच्चाई न फैलेगी जो मैंने अनुभव की है तब तक हमारी धार्मिक एकता नहीं हो सकती। नाम धर्म का लेते हैं लेकिन असल में उन्हें अपना स्वार्थ होता है। मेरे पास सैकड़ों आदमी आते हैं। कोई कहता है, मैं आपके दर्शनों के लिए आया हूं तो मैं अपने दिल में हंसता हूं। असल में

कोई स्वार्थ होता है। किसी समय इन्सान उस इच्छा को प्रकट नहीं कर सकता। क्योंकि उसे शब्द नहीं मिलते। तो कोई न कोई कुरेद बाकी है। मेरी कुरेद तो आप लोगों की दया और मन के रूप को समझने से समाप्त हुई। मगर जब मैं फिर शरीर में आ जाता हूं तो कुरेद रहती है।

(ऊंची बातें को क्या करोगे, छोटी छोटी बातें लो)

अच्छी संतान पैदा करो। संतान का अच्छे विचार से पालन पोषण करो। उन्हें अच्छा विचार दो, अच्छी संगत दो। घरों में शान्ति रखो। अधिक विषय मत भोगो। हर आदमी का भला चाहो। विचार में शक्ति है। तुम्हारा लोक भी बन जायेगा और परलोक भी बन जायेगा। एक विश्वास रखो कि मरने से पहले तुम्हारा प्रेम किसी भी स्थूल चीज़ से नहीं होना चाहिए। मैंने अपने अनुभव के आधार पर मार्ग बिलकुल आसान कर दिया।

"राम नाम एक अक्षर लो
बहुता पढ़या चूलहे में दो"

तुम घर में रहो और शुद्ध कमाई करो। पति पत्नि का आपस में प्रेम होना चाहिए। जितनी तुम्हारी आमदन होती हैं उससे अधिक खर्च मत करो। सबसे पहले अपने घरवालों की सेवा करो। गुरु की सेवा पीछे। वह मालिक तो मन चित बुद्ध और अहंकार से परे है। उसका कोई अधिकारी नहीं। तुम संसारी हो, आपको संसार की बातें बता दी। एक जगह विश्वास रखो और ध्यान किया करो। तुम्हारे ध्यान में बड़ी शक्ति है मैं चकित हो जाता हूं, लोग मुझे अपने प्रेम से बना लेते हैं। और मुझे नौकर बनाकर मुझसे काम ले लेते हैं यह तुम्हारे अपने ही मन का विश्वास और श्रद्धा है। क्योंकि मानव अपने ऊपर विश्वास नहीं करता। इसलिए दिवानो ! जिसका तुम ध्यान करते हो वह भी तुम्हारा अपना ही रूप है और तुम्हारा अपना ही मन है। कोई गुरु या देवता बाहर से नहीं आता। जिस प्रकार का तुम्हें Suggestion and impression मिला हुआ है वह आता है। कभी किसी हिन्दु के अन्तर मुहम्मद दिखाई दिया और किसी

मुसलमान को कभी राम और सीता दिखाई दिये। यह हम गुरुओं ने अपने स्वार्थ के लिए रोचक और भयानक बातें कह कहकर हमें अपने जाल में फंसाकर अपने डेरे और सम्पत्ति बनाई और मरती बार अपने घरवालों को दे गये। मैंने यह मन्दिर सच्चाई बताने के लिए बनाया कि बात यह नहीं यह है। ऐ मेरे दोस्तो! मैं तुम्हारे साथ झूठ नहीं बोलता। जब से मुझे यह ज्ञान हुआ कि मैं कहीं नहीं जाता। यह हर एक का अपना ही विचार है तो मेरे दिल से मौजूदा गुरुवाद का मान चला गया। गुरुवाद का मान तो कायम है मगर मौजूदा गुरुवाद का मान चला गया। मैंने देखा कि इन सन्तों और महात्माओं ने हमें अज्ञान में रखकर मुर्ख बनाकर लूटा है और हम गृहस्थियों ने अपनी आशाओं के अधीन अपने बच्चों के पेट काट काटकर इनके आश्रम बनाये हैं।

जबसे मुझे यह ज्ञान हुआ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तब से मेरा खून बदल गया, विचार बदल गया, और मेरा जीवन और दृष्टि कोण बदल गया। मुझे दाता दयाल की आज्ञा थी

कि शिक्षा को बदल जाना। क्योंकि मैंने सच्चाई वर्णन करनी थी, मैं काम करना नहीं चाहता था इसलिए हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के पास गया। उन्होंने मुझे विवश किया कि गुरु की आज्ञा का पालन करो, निर्भय होकर काम करो मैं तुम्हारा संरक्षक रहूंगा। मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है।

संसार वालों ने गुरुमत को नहीं समझा। यह जो आम सत्संग है यह गुरुमत का नहीं है। यह गुरु-का नहीं है। यह गुरुमत की असलियत को बताने का है। गुरुमत कहते हैं, जो गुरु मुझको कहता है वह मेरे लिए गुरुमत है और जो किसी और को कहता है वह उसके लिए गुरुमत है। सबके लिए एक नियम नहीं है। मेरे भाई के लिए आज्ञा थी कि तुमने नाम नहीं जपना। तुम्हारे लिए Work means life and life means work क्या करो? चौबीस घण्टे में से 16 घण्टे काम करो, छः घण्टे सोओ और दो घण्टे में प्रातः सायं अपनी आवश्यकताओं को पूरा करो। Non Matric लड़का था। उसने उनकी आज्ञा को पाला, राय साहिब का खिताब पाया और Trafic

manager of Railways बनकर रिटायर हुआ। मेरी स्त्री Self respect वाली थी। मैं उसकी ओर से लापरवाह हो गया। जिसका पति परवाह नहीं करता उसे सारे आदमी दुख देते हैं। उसने दाता दयाल को शिकायत की कि मुझे अमुक अमुक आदमी तंग करते हैं। मेरा पति मेरी परवाह नहीं करता। उन्होंने लिखा, तुम्हें पति वापिस मिलेगा, धनवान, सन्तानवान और मान प्रतिष्ठावान होगी। साल दो साल इन्तज़ार करो और अगर तुम्हें कोई एक ताहना दे तो उसे सोलह: ताहने गिनकर सुनाया करो चाहे वह फकीरचन्द भी क्यों न हो। यहां कुवेरनाथ आया हुआ है। वह दाता दयाल का शिष्य है। उसे आज्ञा है कि जिस काम को करते हुये तुमको अड़चन पड़े उसमें तुम सफल हो जाओगे। 1931 में कशमीर गये। यहां सत्संग के प्रारम्भ में राधास्वामी कहते हैं। उन्होंने कहा हिंसा परमोधर्म: ! हिंसा परमो-धर्म: !! ये शब्द उन्होंने दो वार कहे। लोगों ने कहा महाराज ! अहिंसा परमोधर्म: है, हिंसा परमोधर्मा नहीं।, वह कहने लगे नहीं, तुम्हारे वास्ते हिंसा परमोधर्म: है। महाराज ! क्या करें ? सब इकट्ठे

हों जाओ, मरो और मारो। स्त्रियें आई, उन्हें कहा चोले मत पहनो तलबारें रखो, सलवार और कमीज़ पहनो। उन्होंने आज्ञा मानी, हिन्दु मुसलमानों की लड़ाई हुई, वे जीत गये। व्याख्यान देना गुरु-पना नहीं है। गुरु हर एक को उसकी प्रकृति के अनुसार उपदेश करता है हर एक आदमी की प्रकृति अलग-अलग है। शान्ति देने के लिए भिन्न २ ढंग हैं।

गुरु नाम अनुभव और ज्ञान का है। बाहर का गुरु समझ देता है, सच्चाई बताता है, गुरु का पता देता है और भेद देता है। किसी पूर्ण पुरुष की बात को सुनकर, समझ कर उस पर अमल करना गुरुमत है। मैं गुरु नहीं हूं। मैं किसी को नाम नहीं देता। मैं जो मुँह से बोलता हूं, मेरा यही नाम दान है। मैंने किसी को चेला नहीं बनाया। शास्त्र कहते हैं चेले के पापों का फल गुरु को मिलता है, परजा के पापों का फल राजा को मिलता है और बच्चों की ग़लतियों तथा कुकर्मों के ज़िम्मेवार उसके मां बाप हैं।

दुनियां ने गुरु भक्ति इतनी ही समझी है कि गुरु का ध्यान करते रहो। मेरा अनुभव यह कहता है कि यह गुरु भक्ति नहीं है। मैं यह नहीं कहता कि ध्यान न करो। मगर जिस रूप का ध्यान करते हो वह तुम्हारा अपना ही मन है। ध्यान से तुम्हारी विचार शक्ति Will power अवश्य बढ़ेगी, मन की चंचलताई दूर होगी। मगर बिना सत्संग के इन्सान लाख शब्द योग करता रहे उसको शान्ति नहीं मिलेगी। मैं गुरु भक्ति बारे यह कहना चाहता हूं। मैंने गुरु भक्ति यह समझी है कि सत्संग में जाकर किसी निर्वन्ध पुरुष जो निस्वार्थ हो, जिसे निजी मान प्रतिष्ठा और धन की आवश्यकता न हो। ऐसा फकीर यदि वह समझदार है तो वह गुरु कहला सकता है, दूसरे नहीं। बाणी, बचन गुरु है मगर कोई गुरु भी हो।

ऐ भारत वासियो ! मैंने यह जितना काम किया है दर्दे दिल से किया है। अगर ये गुरु ग़लती पर न होते तो मैं कभी यह काम न करता। हमें इन गुरुओं ने मूर्ख समझ कर लूट लिया है और हम गृहस्थी अपने अज्ञान से लुट गये। हमें सच्चाई का पता न लगा।

ऐसे ऐसे प्रोपेगण्डे किये गये जिनका कोई हिसाब नहीं। मैं ग़लत गुरुवाद और ग़लत प्रापोगेण्डे के विरुद्ध उठा हूं। एक दिन पहले एक आदमी ने मुझे बताया कि लुध्याना में किसी गुरु का सत्संग होता है। वहां एक आदमी है जिसने उस गुरु से नाम लिया हुआ है। वह खूब शराब पीता है। सत्संगियों ने उसे झाड़ा और कहा तू गुरु द्रोही है। वह डर गया। वह कहता है, वह गुरु उसके अन्तर आया और उस गुरु ने उसे बहुत मारा और कहा कि अगर तू शराब पीयेगा तो तेरी जान ले लूंगा। उस दिन के बाद उसने शराब नहीं पी। अब दुनियां यह समझती होगी। मैं भी ऐसा ही समझता था कि वह गुरु वहां आया और उसने उसको मारा। लुध्याने में प्रापोगेण्डा हो गया कि अमुक गुरु इतना शक्ति शाली है कि उसने मार मारकर उसकी शराब छुड़ा दी। मगर यह सच्चाई नहीं है। मैं समय का सन्त सत्गुरु हूं। सच्चाई वर्णन किये जाता हूं जो मेरे साथ बीती। कुछ साल हुये, मैं सरसोंहैडी गया। वहां किसी का लड़का शराबी था। बहुत शराब पीता था। वह आया, मैंने कहा बच्चा! शराब मत पिया कर।

बचन दे। उसने बचन दे दिया हाथ आगे कर दिया। मैंने उसे कहा-बहुत अच्छा। फिर जब मैं सरसोंहैडी गया तो वह आया। मैंने उसे नहीं पहचाना। मैंने पूछा बताओ, उस शराबी का क्या हाल है, वह जो अमुक ग्राम का था ? वह कहने लगा। वह मैं ही हूं। मैंने कहा शराब छोड़ दी है ? बाबा ! आपने छुडवाई है। मैंने थोड़ी छोड़ी है ! मैंने पूछा किस प्रकार ? वह कहने लगा मैंने आपसे वायदा किया था कि मैं शराब नहीं पीऊंगा मगर पन्दरह दिन के बाद मैंने फिर शराब पी ली। जब मैंने शराब पी तो आप मेरे सामने आये। आपने इतने क्रोध से मुझे देखा कि मेरे कपड़ों को आग लग गई। मैं तो गया नहीं। सब दुनियां भूली हुई है। जो रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है चाहे वह मेरा है या किसी गुरु का है वह तुम्हारा अपना ही मन है। कोई गुरु बाहर से नहीं आता। ऐसे प्रापोगेण्डे, यह सब धोखा और फरेब है। इसलिए मैंने यह काम दर्दे दिल से किया है और इस भेद को खोल दिया।

मेरे अनुभव में यह आया है कि हर धर्म वाले ने अपनी बड़ाई रखने के लिए रोचक और भयानिक

बातें की । यहां होशियारपुर में भाई जोगासिंह हुआ है । कहा जाता है कि वह रण्डी के पास जाने लगा तो आगे गुरु गोविन्द साहिब जी खड़े थे । यह इतिहास में आया है । वापस आया । फिर जाने लगा तो फिर गुरु गोविन्द साहिब जी खड़े थे । लिखने वालों ने यह लिख दिया कि सत्संग में गये तो वहां गुरु महाराज को ऊंघ आ रही थी । वह कहने लगे कि एक दिन पहले रात को हम तेरा पहरा देते रहे । उन्होंने पहरा दिया होगा । मेरे साथ जो हुआ, मैं वह बताना चाहता हूं । क्यों ? मैं स्वयं लुट गया था । मैंने बसरेवगदाद में बारह साल जो कुछ कमाया सब दाता को भेजा । सोने के ताज और चान्दी के हुक्के बनवाये तो वह मुझे झाड़ा करते थे । मुझे लोगों से समझ आई गवालियर में एक सरदार है वह ठेके का काम करने के लिए किसी धनी विधवा से उधार लिया करता था । उसे रुपये की आवश्यकता थी । उस विधवा ने कहा आकर ले जाओ । उसकी स्त्री को संदेह हुआ कि वह विधवा उसे काबू करेगी । जब वह जाने लगा तो उसकी स्त्री उसे कहने लगी कि जा, तेरा राखा दाता दयाल रहेगा । उसका पत्र

आया, उसमें लिखा था कि तेरे दाता दयाल ने मुझे यहां भी नहीं छोड़ा। मेरी चारपाई इधर और उस स्त्री की उधर थी। मैंने चार बार उठकर उसके पास जाना चाहा लेकिन जब जाता था तो आगे बाबा फकीर खड़े होते थे। जब मेरे साथ यह बीती तो इन बातों को कैसे मानूं। लोग कहते हैं, गुरु तेग बहादुर साहिब ने जहाज़ को कन्धा दिया। दिया होगा। कशमीर की एक महिला लिखती है कि मैं अमरनाथ यात्रा पर जाती हुई एक नदी में नहाने गई। वहां नदी में वह गई और भंवर में आ गई : बाबा फकीर आया और निकालकर किनारे पर खड़ा किया। मैं अपनी जान वचाना चाहता हूं। अगर मैं तुम्हारे साथ सच्चा व्यवहार नहीं करता तो मेरे जैसा कौन दोषी तथा पापी है। मुझे तो पता तक नहीं। जो कुछ खेल है वह तुम्हारे विश्वास का है। लोग मुझपर विश्वास करते हैं उनके काम हो जाते हैं, मेरे नहीं होते। अगर कोई बात कहता हूं तो वह हो जाती है। यह नहीं कि मैं करता हूं। मैं करने वाला कौन हूं। ऐसा होना होता है जो आदमी सच्चा होता है उसके मुँह से सदा ही सच्चाई निकलती है। मैं

अहंकार की बात नहीं कहता। मैंने वह काम किया है जो आज दिन तक भारतबर्ष में किसी पंथ वाले ने नहीं किया। तुम लोगों को लूट से बचाना चाहता हूं।

सब को राधास्वामी !

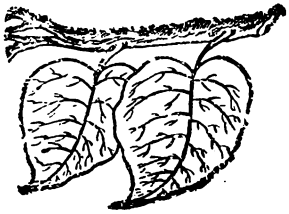

सत्संग परमसन्त परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक 15-4-79

राधास्वामी । मैंने बैसाखी का सत्संग कबीर साहिब के शब्द से शुरू किया था ।

घूंघट का पट खोल रे, तोको पीव मिलैंगे ।

हमारे अन्तर कोई तलाश है । तुम्हारे अन्तर भी वही तलाश है । मुझे कैसे तंग करते हो ? या औरों को तंग करते हो । संसार की इच्छा रखने वाले, उस को पूरा करने के लिए जगह जगह फिरते हैं । कोई गंगा जाता है, कोई दयोट सिद्ध जाता है, कोई चिन्तपुरनी जाता है, कोई होशियारपुर आता है और कोई कहीं जाता है । मैं कहता हूं, ऐ इन्सान ! न कोई

चिन्तपुरनी में है, न होशियारपुर में है। जो कुछ है, तुम्हारे अपने मन में है।

मेरे अन्तर भी तलाश थी। मेरी तलाश तो आप लोगों ने समाप्त कर दी। जब मैंने तुमसे सुना कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर जाता है और मैं नहीं जाता। ये जितने रूप दृष्य हमारे अन्तर प्रकट होते हैं ये केवल Suggestions and Impressions होते हैं। कुछ पिछले कर्मों के और कुछ इस जन्म के अज्ञान के कारण। कोई गुरु किसी के अन्तर नहीं जाता, तो फिर मैं आगे जाने के लिए विवश हुआ। मैंने बड़ा उत्साह हिम्मत करके सच्चाई का बर्णन किया है। कोई महात्मा ऐसी बात नहीं कहता। दाता ने किताबों में अवश्य बहुत कुछ लिख दिया मगर मेरी सारी आयु उनके साथ व्यतीत हो गई, उन्होंने कभी मुझे यह नहीं कहा फकीर, मैं 1905 में तेरे अन्तर प्रकट नहीं हुआ था। मैं यह स्पष्ट वर्णन क्यों करता हूं ? मैंने जब देखा कि इन गुरुओं की बहुत बुरी दशा हुई तो मैं डर गया। इसलिए मैं अपनी Conscience को साफ रखकर जाना चाहता हूं। मैं कहता हूं, ऐ इन्सान, तेरा रक्षक और भक्षक तेरा

अपना ही आप है। बाहर का गुरु तुम्हारी प्रकृति अनुसार तुम्हारे मन को ठहराने और अनुभव कराने का एक साधन है। मैंने गुरु बनके देखा है। हम गुरुओं ने जितने पाप किये हैं शायद गृहस्थियों ने नहीं किये।

मैं तो राम को मिलना चाहता था। जब मुझे मन के रूप की समझ आई तो फिर मैं मन को छोड़कर आगे जाता हूं। आगे प्रकाश और शब्द है। उसमें उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश और शब्द को देखती है। उसका मुझे अन्त नहीं मिलता। कभी ऐसी समाधि लगती है कि ढूंढ़ता ढूंढ़ता अपने आपको ही गुम कर जाता हूं। "मैं" ही नहीं रहता।

घूंघट क्या है? अगर पट खुल गए तो पिया क्या है? घूंघट खोलकर किस पिया के दर्शन करोगे? उस प्रीतम के जो Oneness है। क्योंकि यह अनुभव का विषय है इस वास्ते मेरे पास शब्द नहीं हैं। वह पिया क्या है? जहां हम अपनी हस्ती Individuality को खो जाते हैं। वह हमारी पिया की आद अबस्था है। जिस प्रकार आप गहरी नींद में चले जाते हैं वहां क्या है? यही बात कबीर तथा स्वामी जी ने

कही मगर उनके पैरोकारों ने इस बात को प्रकट नहीं करने दिया। घूंघट कैसे खुलेंगे ? कुछ तुम्हारे साधन और कुछ सत्संग से। मगर तुम लोग सत्संग के लिए तो नहीं आते। स्त्रियें आईं और मुझे नाई बना दिया। बच्चों के बाल कटवाती हैं। डरते डरते बाल काटे कि बच्चे को कष्ट न हो।

क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा वह पिया कौन है ? जहां हम नहीं होते। हमारी "मैं" और तू दोनों ही नहीं रहती। यही स्वामी जी ने जेठ महीने की बाणी में कहा है। वह भेद देते हैं, अरे भाई ! तू जिस खुदा को खोजता है और जहां हमने जाना है, वह अवस्था क्या है ?

नहीं खालिक मखलूक न खलकत।

जो हमारा आद है पिया है, उसमें न खालिक है और न खलकत है।

कारन कारज नहीं वहां दिक्कत,
राम रहीम करीम न केशो।

जो मेरा अनुभव है वह यह जेठ महीना सिद्ध करता है। मैं स्वयं सोचता हूं कि मैं अज्ञानी था जो

राम को तलाश करता था। वह राम तो मेरी ज़ात है। मुझसे न पहले जुदा था और न अब है। कबीर साहिब का शब्द जो मैंने पढ़कर सुनाया कि :-

"घूंघट के पट खोल रे तोहे पिया मिलेंगे"

जो आदमी ऐसे शब्दों को पढ़ेगा, वह पिया को ढूंढने के लिए पागल होगा या नहीं होगा ? मगर वह पिया क्या है ? Where there is nothing जहां हमारी अपनी Individuality समाप्त हो जाती है। "हम" नहीं रहते। कबीर साहिब का शब्द है।

सखिया वा घर सब से न्यारा, जहं पूरन पुरुष हमारा।
जहं नहिं सुख दुख सांच झूठ नहीं, पाप न पुन्न पसारा।
नहिं दिन रैन चन्द नहिं सूरज, बिना जोति उजियारा।

वह कहते हैं वहां जोति भी नहीं है, चांद भी नहीं है और सूर्य भी नहीं है मगर वहां उजाला है। बताओ, कोई क्या समझेगा ? तुम ही सोचो, बड़े २ बुद्धिमान आदमी बैठे हों वहां क्या है ? कबीर साहिब कहते हैं कि बिना जोत के उजारा है। वह उजारा क्या है ? काश ! कबीर होता या ये महात्मा होते तो मैं उनसे पूछता या वर्तमान गुरु अपनी रहनी

बताते कि उन्हें क्या मिला ? मगर ये तो मेरे समीप फटकते नहीं। बिना जोत के उजियारा के अर्थ ये हैं कि हमारी Supermost Consciousness जाग जाती है वहां रौशनी आदि कोई नहीं होती। मगर अपनी Super most Consciousness की चैतनता रहती है। मेरी समझ में यह आया है। हो सकता है मैं ग़लत हूं। हो सकता है कि मैं ठीक हूं। यह सच्ची बात है।

नहिं तहं ज्ञान ध्यान नहिं जप तप, वेद कितेव न बानी।
करनी धरनी रहनी गहनी, ये सब उहां हिरानी।
धर नहिं अधर न बाहर भीतर, पिंड ब्रह्मन्ड कछु नाहीं।
पांच तत्व गुन तीन नहीं तहं, साखी शब्द न ताही।
मूल न फूल बेली नहिं बीजा, बिना बृच्छ फल सोहै।
ओअं सोंहं अर्ध उर्ध नहिं, स्वासा लेख न कोहै।
नहिं निर्गुन नहिं सगुंन भाई, नहीं सूच्छम अस्थूल।
नहिं अच्छर नहिं अविगत भाई, ये सब जग के भूलं।
जहां पुरुष तहवां कछु नाहीं, कहै कबीर हम जाना।
हमरी सैन लखै जो कोई, पावै पद निरबाना।

यह पिया है, जहां इन्सान की सुरत सफर करती करती पहुंचती है। मैं अपनी बाबत जानता हूं। मैं ठाकुरों को पिया समझता था। फिर मंदिर में जाता था, राम कृष्ण को पूजा फिर दाता दयाल को पिया

समझा। तुम लोगों के अनुभवों ने मेरी आंख खोल दी। फिर मैंने प्रकाश और शब्द पिया समझा मैं हूं तोप्रकाश और शब्द है। नहीं हूं तो प्रकाश और शब्द कहां से आयेगा ? इसलिए असलियत किसमें है ? तुम में है। तुम उस परमतत्व आधार की किरण हो। मगर हम अपनी "मैं" में आ जाते हैं।

अब मैं सोचता हूं कि इस समझ की संसार को तो आवश्यकता नहीं, तूने क्यों वकवास किया ? मैंने बकवास नहीं किया। मैं गुरु आज्ञाबस कि शिक्षा बदल जाना। शिक्षा को साफ कर चला ताकि मेरे जैसे पाखण्डी गुरु, जिन्होंने अपने डेरे बनाने के लिए गुरुआई की और अपने परिवार के लिए छोड़ गये, उनके जाल से छुड़ाने के लिए अपने जैसे मूर्ख और अज्ञानी जीवों को सच्ची बात बता जाऊं कि तुम अज्ञान में आकर न लुटो। 1919 तक दाता दयाल की जो सेवा की, वह अज्ञान में की। मैंने 1919 के बाद जितनी सेबा की वह ज्ञान में की। यहां तक कि मैं मैंने अपनी स्त्री के गहने बेचकर भी काम कर दिया। मगर उसकी मुझे खुशी है, दूसरे मैंने इस भेद को क्यों खोला ? केवल इस लिए कि हमारी

धार्मिक एकता हो जाये *Unity of humanity* हो जाये। मालिक एक है और वह ज़ात है। लोग कहते हैं कि "वह" हममें रहता है। मैं कहता हूं "वह" हममें नहीं रहता, हम उसमें रहते हैं जैसे मच्छली नदी में रहती है।

जल में मीन प्यासी, मोहे सुन सुन आवे हंसी।

तीसरे अपने कर्म को ठीक करो। इस संसार में कर्म प्रधान है। जो तुमने कर्म करने हैं, तुम्हें कोई ईश्वर परमात्मा या गुरु उस कर्म के दण्ड से नहीं बचा सकता। हां! अगर बच सकते हो तो गुरु के ज्ञान को समझकर, सम्भव है तुम्हें शान्ति मिल जाये। मगर जो कर्म किये हुये हैं वे नहीं कट सकते। मैंने सन्तों की दशा देखी है। उन्हें भी अपने कर्म भोगने पड़े। इस लिए अपनी नीयत को साफ रखकर अपने कर्म को ठीक करो। अभ्यास से केवल अनुभव Realization जागता है, कर्म के फल से नहीं बच सकते।

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। मैंने यह काम केवल अपने जैसे मूर्खों के

लिए किया है कि तुम बात को समझ जाओ। गुरु की मत को मत लो जब तक तुम Test न कर लो कि यह पूर्ण गुरु है। हम गुरु लोग जब कोई बात कहते हैं अपना उद्देश्य अपने सामने रखते हैं। मैं तो स्वयं महसूस करता हूं। मुझे यह काम मिला है। मैं महापापी हूं। मेरे पिछले जन्म के बुरे कर्म थे जो मुझे यह काम करना पड़ा। लोग गुरु बनने में खुश होते हैं और मैं रोता हूं। तुम लोगों को सच्ची समझ नहीं है इसलिए मुझे घेर लेते हो। अब मैं कहां जाऊं। जो कुछ मैं कहता हूं उसको सुनो और समझो। अगर अच्छी लगती है तो अमल करो।

Oneness जो मालिक है, वह पिण्ड अण्ड और ब्रह्मण्ड से परे है। वह, वह अवस्था है जहां मैं और तू नहीं रहती, न गुरु चेला रहता है, न स्वामी सेवक रहता है। वह यहां नहीं रहता। यह बिल्कुल सच्ची बात है। अगर वह यहां आ जाये तो न तू न मैं। सोच लो। बुद्धि वाले सोचें। जैसे सूर्य यहां नहीं रहता उसकी किरणें रहती हैं। अगर सूर्य यहां आ जाये तो सब जलकर खाक हो जाये। फिर तुम

मालिक की इबादत कैसे कर सकते हो ? मालिक की अंश हर एक आदमी में मौजूद है। दुखियों की सहायता करो। अगर कोई उसकी इवादत करना चाहता है तो इन्सान, इन्सान की सेवा करे।

भान रूप मालिक सुन भाई।
हर हृदय रहा समाई।

मगर एक आदमी तो सब संसार की सेवा नहीं कर सकता। जिनको प्रकृति ने तुम्हारे साथ लगाया है उनकी सेवा करो। बूढ़े मां बाप हैं, विधवा बहन है, भाई हैं' उनकी निष्काम होकर सेवा करो। वह ईश्वर की असली और सच्ची भक्ति है। दो घण्टे बैठकर समाधि लगाकर राम-राम का सुमिरन करना इबादत नहीं है। वह तो मन की चंचलताई को दूर करने के लिए आदत है। इस वास्ते मैंने बहुत सोचने के बाद "इन्सान बनो" की आवाज़ उठाई है। Charity begins at home. दान अपने घर से आरम्भ होता है। तुम्हारे बच्चे भूखे मरें, उनकी आवश्यकतायें पूरी नहीं होती, मगर तुम अपने अज्ञान से बाबे फकीर के मंदिर बना देते हो, क्या तुम दोषी नहीं

हो ? दोषी हो। मैं स्पष्ट वर्णन इसलिए करता हूं ताकि मेरी आत्मा पर कोई बोझ न आये।

दाता ने मुझे दो जहां का पीर कहा है। पीर गुरु को कहते हैं। दो जहां, एक हमारी जाग्रत की दुनियां और दूसरे मन के स्वप्न हैं। मैं संसार में दो जहां में रहने का ढंग बताता हूं। मैं कहता हूं, ऐ इन्सान ! अपनी जाग्रत अवस्था में अपने विचार को ठीक रख। किसी से घृणा, राग द्वेष, चार-सो-बीस हेराफेरी मत कर। दूसरे अपने स्वप्नों पर या मन के विचारों पर मत दौड़ा करो।

मैंने तीन सत्संगों में आपको बता दिया कि वह पिया कौन है ? वे ग़िलाफ क्या हैं और कैसे उतरते हैं। मगर मैं बड़े उत्साह से कहूंगा कि असलियत या प्रकृति के भेद का पता न कबीर साहिब को लगा और न किसी और संत को लगा। क्योंकि जब आप चलता चलता आप ही लोप हो गया तो उसने कह दिया कि वह वह है। मालिक को किसी ने नहीं जाना। क्योंकि तलाश करने वाला तलाश करता करता अपने आपको भूल जाता है। जब होश आती है तो वह कह देता है कि मालिक अनामी, अरंग और

अरूप है वह क्या है क्या नहीं, कोई कुछ नहीं कह सकता। बस, वह है उसमें लय हो जाओ। लय होने के समय जो तुम्हारी दशा होती है वही मालिक की दशा है। वेदान्ति कहता है कि जगत मिथ्या है। बाहर का जगत तो कब से बना हुआ है, मिथ्या कैसे है ? यह वह अपने विचार से कहता है।

अब मैं कुछ अपना कर्त्तव्य पूरा करना चाहता हूं। जो मेरा अनुभव अभ्यास बारे है वह कहूंगा। आपको याद है कि मैं लोगों को नाम नहीं देता जिस तरह दूसरे गुरु देते हैं।

सब को राधावामी !

सत्संग परमसंत परमदयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

कल सायंकाल मैंने यह सत्संग जो मार्च 1971 में दिल्ली में दिया था सुना! सोचता हूं जो कुछ मैंने कहा है, क्या यह ठीक है? सारी रात इसी धुन में रहा। अपना जीवन सामने आता है। बचपन से मालिक को मिलने निकला था। मेरी किस्मत, भगवान की इच्छा 1905 में दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने संत मत या राधास्वामी मत दिया। इन कबीर साहिब की, स्वामी जी की, या सन्तों की बाणियां पढ़कर तबीयत घबराती थी। इनमें जो खण्डन था वह मेरे लिए दुःख का कारण था। मगर दाता दयाल की ज़ात पर मेरा विश्वास नहीं टूटा। इसलिए यह समझता रहा

कि मैं मन्जिल पर नहीं पहुंचा। इसलिए मुझे बाणियां ग़लत मालूम होती थी। प्रण किया था इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा। जो अनुभव होगा बता जाऊंगा। दाता दयाल जी ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना फकीर! चोला छोड़ने से पहले! इसलिए मैंने यह काम किया। मगर दावा नहीं करता। कि मैं जो कुछ कहता हूं यह नितान्त सत्य है। मेरा अनुभव मेरे साथ है। मगर दूसरे महापुरुष सन्त मत के पैरोकार समझते हैं कि मेरा अनुभव ग़लत है, तो बड़ी खुशी से मेरा खण्डन कर दें। मुझे कोई दावा नहीं। मगर वह खण्डन निज अनुभव के आधार पर हो। किताबें सब रोचक और भयानक बातों से भरी हुई हैं, मगर याद रखना अगर जो कुछ मैंने लिखा है, अनुभव किया गुरु होने के या शिष्य होने के नाते, अगर यह अनुभव ऐ महात्माओ! तुम्हारा भी है और तुम किसी निज स्वार्थ के लिए या पन्थ के लिए अगर ग़लत तरीके से खण्डन करोगे तो कुदरत आपको सज़ा दिये बगैर नहीं छोड़ेगी।

मजहबों और पन्थों के अज्ञान के विचारों ने पहले ही बहुत मानव जाति को बांट कर इनके सिर फड़वाये हुए हैं। क्योंकि मेरे जिम्मे डियूटी थी जगत कल्याण की इसलिए मैंने जो अनुभव किया, कहा और यह सच्चाई है। अगर यह समझ में आ जाये तो हमारी धार्मिक एकता हो सकती है। बाकी रहा जन्म मरन से बचना इसे कोई नहीं चाहता। मैं यह समझता हूं यह मेरी नादानी है जो मैं निवृति मार्ग की तालीम देता हूं। फिर भी जो आवागवन से बचना चाहते हैं उनको कहना चाहता हूं कि जब तक कोई आदमी स्थूल पदार्थ और मन के सूक्ष्म विचार से आगे नहीं जाएगा उसे मोक्ष नहीं मिलेगा। आगे तो सन्तों ने ही सिद्ध किया था कि शब्द और प्रकाश में जाओगे तब मुक्ति होगी, गौ गरुड़ पुराण भी यही कहता है मगर अब विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है कि मरते समय सूक्ष्म शरीर जब निकलता है तो वह भारी होता है। कोई 10 ग्राम कोई 20 ग्राम कोई 25 ग्राम। तो भारी होने की वजह उसके मन का अपने स्थूल और सूक्ष्म पदार्थों से प्यार व प्रेम है। इसलिए वह भारी होता है। इसलिए

राधास्वामीमत या सन्तों के मार्ग में ख्याल दिया जाता है कि बिना शब्द योग के मुक्ति नहीं मिलती और मैं इसे सत्य मानता हूं। मेरी यह इच्छा है कि मेरा सत्संग लोग पढ़ें। विशेष रूप से सत्संगी लोग या तो मेरा खण्डन करें या अपना जन्म बनाएं। इस ख्याल से दोबारा प्रकाशित करवा रहा हूं।

काल ने जगत अजब भरमाया, मैं क्या २ करूं बखान।
जो साधन थे पिछले जुग के, सो कलयुग में किये प्रमाण॥

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। इस दुनियां में जितने भी मज़हब पैदा हुए, पन्थ पैदा हुए सब ने अपने २ ख्याल को ऊंचा बता कर अपने ख्याल को बढ़ाया और उसे सच्चा समझकर सब दूसरों का खण्डन कर दिया। इस का परिणाम यह निकला कि संसार के अन्दर अनेक विचार धाराऐं मज़हब की आ गई हैं। और मेरे जैसे हकीकत, सच्चाई और शान्ति के खोजी या आवागमन से बचने या मालिक को मिलने के जो जिज्ञासु थे वे इनके चक्कर में आ गए। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं तूने अपने आपको संत सत्गुरु वक्त, अनामी धाम

से आया हुआ और अवतार कहा क्या तू दुनियां को अपने जाल में तो नहीं फंसाना चाहता ? मैं दुनियां को आज़ाद करना चाहता हूं। ताकि दुनियां के आदमी इन मज़हबों, पन्थों और धर्मों के जाल से निकल जाएं। किसी मज़हब में पैदा होना आशीर्वाद है मगर किसी मज़हब में मर जाना शाप है। "To born in a Church is a blessing but to die in a Church is a curse."

स्वामी जी ने यह कहा है। कि काल ने सब जग को भरमाया हुआ है। मुझे तो पहले यह समझ नहीं आती थी कि काल किसे कहते हैं और दयाल किसे कहते हैं। यह काल और दयाल के शब्द केवल सन्तों के मार्ग में आये हैं। हिन्दुओं में ब्रह्म, पारब्रह्म, माया, ईश्वर है परमेश्बर है। मुसलमानों में अल्लाह है, बुद्धों में 'बुद्ध है, जैनियों में 'ज़ैन' है। ऐसे २ शब्द हैं अपने प्रण के अनुसार कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। मैं दावा नहीं करता जो कुछ मैं कहता हूं वही ठीक है, और न ही मैं नाक कटों की तरह स्वामी जी के साथ हां में हां मिलाता हूं। मुझे जब इस काल की और दयाल की समझ

नहीं आती थी तो मैं दाता से बहुत प्रेम किया करता था जैसा कि यहां लिखा हुआ है कि सत्गुरु ऐसे प्यारे लगे जैसे :-

माता को जस पुत्र प्यारा, और कामी को कामिनी जान,
मछली को जस नीर अधारा चात्रिक को जस स्वाति समान।

ऐसी ही मेरी दशा रही है। अपने जीवन में दाता से मैंने बड़ा प्रेम किया। जब उन्होंने देखा कि इसको बात समझ नहीं आती यह गुरु भक्ति नहीं कर सकता तो उन्होने यह गुरु पदवी मुझे दी थी। और कहा था कि तुमको इस सन्तमत की समझ व सच्चा ज्ञान देने वाले सत्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेंगे। तो मुझे काल की समझ कैसे आई। जब मेरे बारे में बहुत से आदमी भिन्न २ Provinces के और Foreign Countries के यह कहते हैं कि मेरा रूप उनकी सहायता करता है। मैं अपनी आत्मा को सच्चा रखकर भारत-वर्ष के लोगों को कहना चाहता हूं कि दोस्तो! मेरे शरीर को कुष्ट पड़े अगर मैं झूठ बोलूं। मुझे कोई पता नहीं होता। आज एक औरत कह रही थी कि उसके पति की आंख को चोट लगी। डाक्टरों ने कहा आंख का ओपरेशन

होगा। आंख चली गई। वह कहती है कि मेरी फोटो के सामने वे 24 घण्टे प्रार्थना करते रहे। आपकी फोटो से आवाज़ आई कि तुम्हारा पति अच्छा हो जायेगा और 24 घण्टों के बाद डाक्टरों ने कहा कि इसकी आंख ठीक हो जायेगी बिना ओपरेशन के और ठीक हो गई। ऐसा ही अपने सत्संगों में और लेखों में, ऐसी घटनाओं का मैं बर्णन करता रहता हूं। इस अनुभव ने मुझको यह बताया है कि इस सृष्टि को जो पैदा करने वाला है वह बाहिर में Universal mind कर्त्ता पुरुष है जो अपनी वासना से इस सृष्टि को पैदा करता है। चूंकि उसने इन्सान को अपनी ही शक्ल पर बनाया है। जो गुण उस काल में हैं, इस इच्छा करने वाले में हैं वही गुण हर एक इन्सान में हैं। इन्सान का अपना मन है जो संकल्प, विकल्प करता है। वह काल है। अब तुम देखो, मैं तो किसी के अन्तर नहीं जाता, दूसरों को भ्रम होता है कि बाबा फकीर आया। किसी को भ्रम हो गया कि मुहम्मद आया, नानक आया, किसी को भ्रम हो गया कि राम आया, कृष्ण आया, दरअसल बो कोई नहीं होता बल्कि वो हर एक आदमी का

अपना ही मन है। इन्सान के मन के अन्दर तमाम सृष्टि भरी पड़ी है। यह मन ही का राग है, वही काल है और जो उसके अन्तर संकल्प विकल्प, बासनायें होती हैं चाहे वो प्रेम की हैं चाहे वो भक्ति की हैं चाहे वो दुनियां की हैं, बो है माया।

अब इस शब्द में यह ज़िकर आया है कि जो आदमी शब्द अभ्यास करते हैं और गुरु भक्ति नहीं करते :-

गुरु भक्ति बिन शब्द में पचते।
सो भी मानुष मूर्ख जान॥

गुरु भक्ति के बिना जो अपने अन्तर में शब्द को सुनते हैं वो भी मूर्ख हैं, यह लिखा हुआ है। दुनियां ने तो गुरु भक्ति जैसा कि आजकल रिवाज है यही समझी हुई है न! कि गुरु महाराज आ गये, उनके लिए फूलों का हार ले गये, फल ले गये, और मत्थे टेके, यह गुरु भक्ति नहीं है। हां गुरु भक्ति की शुरू की हालत ज़रूर है। जिस तरह स्कूल के अन्दर जब पहले दिन हम लड़के को दाखिल कराते हैं, तो हमारी सभ्यता के अनुसार जिस गुरु से उपदेश दिलाना होता है उस को फूल और कपड़े देते हैं कि

नहीं देते ! तो केवल फूल और कपड़े देने से लड़के को स्कूल में दाखिल कराने से तो वो डिगरी को हासल नहीं कर सकता ! वो डिगरी तो तब हासल करेगा जब जो कुछ गुरु कहता है, समझाता है, विद्या देता है अगर वो उस को ग्रहण करेगा। इसी तरह जब तक गुरु की बात को कोई समझता नहीं, लाख वो गुरु के पांव पड़े, रुपये दे, मानवता मन्दिर बना दे, आगरे में शीश महल खड़ा कर दे वो इस काल के चक्कर से नहीं निकल सकता है और न ही कभी निकलेगा। आजकल के जितने गुरु हैं यह सब तुम लोगों को अपनी देह भक्ति के सिवाय और अपने डेरों में रुपया इक्ट्ठा करने के सिवाय और कोई भी बात सच्चाई की तुम लोगों को नहीं कहते और अगर कहते भी हैं तो इस तरह से कहते हैं कि किसी की समझ में न आवे, सैन बैन करते हैं. इशारा करते हैं। पिछला समय था केवल सैन बैन करने का, मैंने अपने आप को संत सतगुरु कहा है और अवतार कहता हूं। आत्मा से पूछता हूं, ओ बुद्धे ! तेरी अकल मारी गई, बुद्धि मारी गई, बुद्धि खराब हो गई या तू अहंकारी हो गया ? नहीं ! मैंने यह दशा देखी

कि करोड़ों इन्सान इस समय राधास्वामीमत, नानक मन, निरंकारी मत या और मत्तों में जो शामल हो गये, कोई भी जीव किसी ठिकाने पर नहीं लगा, शब्द में आया है।

ऐसी हालत देख जगत की।
संत सतगुरु प्रकटे आन॥

जब मैंने ऐसा देखा, अपने अनुभव के आधार पर कि यह तमाम गद्धियां और मत्त मतान्तर ग़लत शिक्षा देते हैं। कोई जीव अपने ठिकाने नहीं लगा, तब कुदरत ने मेरे दिमाग़ को हिलाया और मैंने इस सच्चाई की घोषणा की।

गुरु भक्ति क्या है ? गुरु भक्ति है गुरु से प्रेम करना, उनके बचन को सुनना, विचार करना, मानना और समझना, जब तक कोई आदमी गुरु के बचन को नहीं सुनेगा और उसको नहीं गुनेगा, गुरु के बचन पर विश्वास नहीं करेगा तब तक इस काल के जाल से निकलने का रास्ता उस को नहीं मिलेगा। निकलेगा तो वो अपने अमल से मगर गु[illegible] भक्ति से उस को इस काल के जाल से [illegible] निकलने का रास्ता मिल जायेगा।

वो निकलने का रास्ता क्या है ? उनको कहना चाहता हूं जो इस आवागवन से बचना चाहते हैं और अपने असली घर जाना चाहते हैं। जितने यह तुम्हारे रूप रंग रेखायें और बातें अन्तर में आती हैं। यह सब काल और माया हैं। जब तक कोई इस मन के संकल्पों विकल्पों रूप रंगों को छोड़ेगा नहीं और इस मन से परे निर्विकल्प समाधि या दसवें द्वार से परे, जो पारब्रह्म प्रकाश और शब्द ब्रह्म है उस में नहीं जायेगा, उस का यह चक्कर किसी सूरत में खतम नहीं हो सकता ! नहीं हो सकता !! और नहीं हो सकता !!! यह समझ नहीं आती थी, यह समझ मुझ को आप लोगों से आई। आज ही एक खत का मैंने जवाब दिया है। उस ने लिखा है कि रात को उसने स्वप्न में देखा कि मेरा रूप उस के अन्तर प्रकट हुआ। मेरे रूप ने उसको लाट्री का नम्बर बताया कि यह नम्बर कल को लाट्री में डाल दें। वो कि मैंने स्वप्न में उम नम्वर पर लाट्री कहता हे ... ने एक लाख रुपया लाट्री का डाल दी और उस का ... गई। अब वो मुझ मिला, फिर उसकी आंख खुल ... नें लाट्री को लिखता है कि बाबा जी ! आप ने स्वप्न म ...

दिलवा दी अब मैं लाट्री डालूंगा, मुझ को मेरी लाट्री दिला दो, अब ऐ भारत वर्ष के मज़हबी और पन्थिक दुनियां वालो ! मैंने तो कहा नहीं, अगर मैं यह जानता कि फलां नम्बर पर लाट्री निकल सकती है तो मैं खुद ही जो मानवता मंदिर के लिये तुम लोगों के दरवाज़ों पर मांगता रहता हूं तो मैं यह काम छोड़ देता, एक ही बार लाट्री आ जाती लाख रुपये की और मैं मानवता मन्दिर बना देता ! सोचने की बात करो ।

हरिश्चन्द्र ने स्वप्न में दान दिया था, वो क्या था ? वो माया थी और काल था, उसका नतीजा यह निकला कि भंगी के घर में बिका । ऐसे ही यह स्वप्न के दृश्य या मन के खेलों के चक्कर में तुम लोग आकर अपने जन्म का खेल पूरा करते हो । मैंने क्या किया ? मैं भी एक दृश्य द्वारा दाता दयाल के चरणों में गया था, अब मैं महसूस करता हूं, दाता भी क्या करते ! मैं इतना प्रेम किया करता था जिस की कोई हद नहीं ! कहा करते थे फकीर ! तू अभी काल और माया से नहीं निकला है । मैं कहा करता

था ! मुझे तो समझ नहीं आती, कैसे निकलूं । कहा करते थे मेरा हुक्म मानते जाओ निकल जाओगे । मैंने उनका कहा माना, उनका हुक्म क्या था ? नाम दान देना और सत्संग कराना, यह हुक्म था । अब इस नाम दान और सत्संग कराने से मुझे क्या मिला ? यह विश्वास हो गया कि यह जितना खेल है हमारा दुनियां का जाग्रत, स्वप्न सपुप्ति, अभ्यास साधन यह है क्या ? सारे का सारा काल है और माया है । तुम ही सोचो कि मुझे ऐसा विश्वास होना चाहिये कि नहीं चाहिये ? जब मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो कैसे मानूं कि जो मेरे अन्तर में आया या आता है अपनी हस्ती रखता है ! नहीं ।

तो फिर गुरु भक्ति क्या हुई ? गुरु से ज्ञान लेना, इस सच्चाई का ज्ञान जो संतमत में है क्या कोई गद्दी वाला देता है दुनियां को ? हम गृहस्थियों को बेवकूफ बना कर लूटा जा रहा है, हमारी दौलतें छीनी जा रही हैं और हम को पागल और दिवाना बनाया जा रहा है । यह हालत देखकर संसार में मैंने यह अवतार लिया है, फकीर के चोले में । फकीरचन्द के दिमाग़ में आ कर मैं बोल रहा हूं । फकीरचन्द का

शरीर अवतार नहीं ! फकीरचन्द का मन अवतार नहीं ! फकीरचन्द की आत्मा जो प्रकाश स्वरूप है वो अवतार नहीं ! जो अनुभव उस के अन्दर आता है वो अवतार है !! ताकि किसी को यह संशय न रहे और लोग भोले बन कर मुझे अवतार समझकर मेरी पूजा न करते रहें । जो मैं बात कहता हूं, मेरी बात को समझो मगर इसे समझने के लोग अधिकारी हैं ? स्वामी जी ने जो पहले कहा है :-

काल ने जगत अजब भरमाया ।
मैं क्या क्या करूं वखान ॥
जो साधन थे पिछले जुग के, सो कलजुग में किये प्रमान ।
मूरख प्रानी मन सैलानी, सो अटके जल और पाखान ॥
बुद्धिमान अभिमानी जो नर, विद्या नारी के हुए गुलाम ।
बाकी जीव बीच के जितने, ना मूरख ना अति बुद्धिमान ॥
जप तप व्रत संजम बहु धोखे-पंच अग्नि में जले निदान ॥
देखो चरित्र काल करता के-कोई सिर कोई पैर रूंधान ॥
भटक भटक भटकाया सब जग-कोई न लगाया ठौर ठिकान ॥
ऐसी हालत देख जगत की-संत सतगुरु प्रगटे आन ॥

क्या ग़लत कह रहे हैं ? क्या काल ने जगत नहीं भरमाया ? मैं जानता हूं तुम जो मेरे सामने

बैठे हुए हो तुम को ज़रूरत नहीं है इस ज्ञान की, तुम को ज़रूरत है पुत्र मिल जाये, दौलत मिल जाये लड़के पास हो जायें, तुम तो अधिकारी हो इस दौलत के ? तो मैं क्यों देता हूं ? मैं देता हूं केवल अपने कर्म को भोगने के लिये, मैं जो यह काम करता हूं अपना कर्म भोगता हूं ना, मैं बेवकूफ नहीं। मैं जानता हूं कि जो कुछ मैं कह रहा हूं दुनियां नहीं समझ सकती। दुनियां अगर न भी समझे तो मेरे ज़िम्मे क्योंकि गुरु ऋण था कि निबल अबल अज्ञानी जीवों की सहायता करना, जगत कल्यान का काम करना और भव सागर से जीवों को निकालना। इसलिये मैं निबल अबल जीवों की सहायता तो कर रहा हूं कि नादानो ! इन बातों में आकर किसी गुरु के पीछे मत दौड़ो कि उस का रूप तुम्हारे अन्तर आकर तुम्हारी सहायता करता है या मरते समय ले जाता है। तुम भोले हो, वो सहायता करने वाला तुम्हारा अपना ही विश्वास है तुम्हारा अपना ही मन है।

क्या मैं नहीं जानता कि मेरी इस साफ ब्यानी से मुझे कोई नहीं देगा। मैं जानता हूं, मगर मैं दुनियां में पैसे इकट्ठे करने के लिये नहीं आया, न धन और

मान लेने के लिये आया हूं। अब गीता के इतने २ अर्थ हो रहे हैं दुनियां के अन्दर गीता को बड़ा भारा ग्रन्थ माना जा रहा है मगर इसके अमल के बिना ! एक बार मैं गीता भवन में मध्य प्रदेश में गया वहां बहुत आदमी बैठ हुये थे। मैंने कहा कि तुम गीता की तालीम देते हो, गीता किस ने लिखी ? वेद व्यास जी ने। भागवत किस ने लिखी ? वेद व्यास जी ने। मैंने कहा गीता कृष्ण जी ने अर्जुन को सुनाई और वो अर्जुन जिसने कृष्ण के मुँह से गीता सुनी, तुम्हारी भागवत के अनुसार जब पांचों भाई मरे तो युधिष्टर धर्मराज के सामने पेश हुआ तो उसने कहा तेरे लिये ढ़ाई घड़ी का नर्क है क्योंकि तुम ने पोलिसी की थी इसलिये तुम को नर्क है ढ़ाई घड़ी का, जब वो नर्क में गया तो वहां पाचो पाण्डव थे और कौरव भी थे। अब मैं गीता के पढ़ने वालों से पूछना चाहता हूं तुम जो इसकी टीकायें कर रहे हो, अर्जुन गीता सुनने वाला तो नर्क में गया, तो तुम टीका करने वाले कैसे बच जाओगे ? सोच लो ! अगर यह हिन्दु धर्म ठीक है और अगर भागवत ठीक है, मैं 'अगर' का शब्द प्रयोग करता हूं, मुझे तो पता नहीं !

तो हम जितने महात्मा जो इस वक्त संसार से गुज़र गये या मौजूद हैं जो इस सच्चाई को ब्यान नहीं करते परदे में रख कर कि हां, हम जाते हैं या चेलों से अपना प्रापोगेन्डा कराते हैं तो उनके लिए नर्क न होगा ? यह भी तो पोलिसी करते हैं और धन लेते हैं ! तो विद्या वाले लोग इन लफज़ों के या बाणी के जाल में अकल के रास्ते, इन की व्याख्या कर के विद्या नारी के गुलाम हुए हुए हैं ।

संतमत में यह खण्डन मेरी जान को खाया करता था । मैंने अपनी उमर खो दी इस सच्चाई को ग्रहन करने के लिये कि यह सन्तों का मार्ग है क्या ? जब पता नहीं लगता था तो यह काम दाता ने दिया था, ऐ सत्संगियो, तुम्हारे पांव की मिट्टी अपने सिर पर रखने से मुझ को इस काल का और दयाल का और माया का राज़ पता लगा । मैं इस वार बिमारी गया, वहां श्री कृष्ण फस्ट कलास मैजिसट्रेट की औरत बीमार है । पिछली बार जब मैं गया वो बीमार थी, तो मैंने कहा था कि मेरा अनुभव कहता है कि तीन महीने में या तो मर जायेगी या इस को सेहत मिल जायेगी उसको

मारकेश आया हुआ था। वो महीना भर बेहोशी में पड़ी रही, वो कहती है, वो बाबा है, वो बाबा बैठा हुआ है, वो बाबा आया, बस इस के सिवाय और कुछ नहीं कहती थी। अब जो लोग इन बातों को सुनेंगे वो मुझ को चमत्कारी समझ कर मेरे पीछे लगेंगे कि नहीं लगेंगे और मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि मुझे कोई पता नहीं। यही एक राज़ है एक भेद है जो संत सतगुरु के रूप में मैं संसार को देना चाहता हूं, मगर संसार इस सच्चाई को सुनने के लिये कब तैयार है ? कौन सुनता है ? कोई सुनेगा मेरी बात को !! क्यों नहीं सुनते ? क्योंकि वो गुरुमुख नहीं हैं। तुम ने तो गुरुमुखता उसकी समझी हुई है जिस ने मानवता मन्दिर में दो कमरे बना दिये या जिसने बाबा फकीर चंद की मुट्ठी चापी कर दी या बिबो की तरह चाय पिला दी बीच मिलाई डाल कर। दुनियां ऐसे लोगों को गुरुमुख समझती है। गुरुमुख वो है जो गुरु की बात पर विश्वास करता है, मगर इन सन्तों ने भी बड़ी पालीसी से काम लिया, कहने को तो बाबा सावन सिंह भी यही कहते थे, किसी ने कहा महाराज ! आप फलां को मरते समय ले गये तो वो

कहते थे "पुछ लै इन्हां नूं" मैं तो सरसा बैठा होया सी, मैं नहीं सी, कोई होर होगा, बाबा जी होंगे ! मगर क्योंकि इन सन्तों ने एक और पाखन्ड का ख्याल दिया हुआ है "संत अपने आप को छुपाते हैं" ! यह ख्याल दे कर दुनियां को अपने डेरों का गुलाम बनाते हैं। कहा तो युधिष्टर ने भी सच मगर पालिसी रख के ! मैं कहता हूं अगर तुम शब्द और प्रकाश को नहीं पकड़ सके, न सही कुछ हर्ज नहीं, कम से कम तुम इस दुनियां में रहते हुए हेरा फेरी से तो बचो, अपने कर्म को अनुकूल कर लो ! नीयत् को साफ रख के चलो ताकि तुम्हारे कर्म खराब न हों और युधिष्टर की तरह तुम को भी नर्क में न जाना पड़े, पालिसी मत करो। मैं ने अपनी जिन्दगी में पालिसी नहीं की अपनी ज़ात के लिये, जहां तक फकीर चंद का सम्बन्ध था वहां तक।

जीवों की श्रेणीयां हैं। जो पुरुष संसार से सदा के लिये पार होंना चाहते हैं उन को गुरुमुख बनना पड़ेगा। गुरुमुख के क्या अर्थ ? गुरु की बात पर विश्वास करे। फिर साधन करना चाहिये, अब मुझ को भी विश्बास हो गया। मेरे सतगुरु आप सत्संगी

हैं, जब उन्होंने मुझ को बोला तो मैं विश्वास करने पर मजबूर हुआ ना ! तुम सच कहते हो कि मेरा रूप प्रकट हुआ तुम झूठ तो नहीं बोलते तुम भी सच कहते हो और मैं भी सच कहता हूं। तुम काल और माया में फंसे हुये हो और मैं निकला हुआ हूं, फरक केवल इतना है। जब मैं निकल गया तो अब मेरा साधन क्या रह गया ? इस मन के चक्कर को छोड़कर केवल सतगुरु के चरण जो प्रकाश स्वरुप हैं अर्थात पारब्रह्म है, शब्द ब्रह्म है। अब मेरी सुरत उसके चरणों में जाती रहती है, जब तक तुम्हारा ऐसा साधन नहीं होगा, तुम भवसागर से निकल नहीं सकते, हां इस दुनियां में रहते हुए तुम अपनी नीयत को साफ रखो। मन मेरा भी सहारा चाहता है। मैं जब शरीर में आता हूं तो मन के रहते हुए मन जो है, यह मेरे सामने आता है तो उस समय उसको गुरु स्वरूप का ध्यान दो ताकि मन की दुनियां में रहते हुए तुम्हारी जो मानसिक दुनिया है यह अच्छी हो जाये, तुम्हारी दुनियां बन जाये। इस वास्ते तुम यह न समझना कि मैं गुरु स्वरूप के ध्यान को ग़लत कहता हूं, मैं अब तक भी गुरु स्वरूप

का ध्यान करता हूं। जब चलता फिरता, उठता बैठता जब मन में होता हूं तो गुरु स्वरूप का ध्यान करता हूं। मगर वो जो गुरु स्वरूप महर्षि जी का रूप मेरे सामने आता है मैं उस को उस परम तत्व आधार, उस सच्चे सतगुरु का साकार रूप मानता हूं, तुम भी वो रूप मानना।

इस दुनियां में रहने के लिये चाहे मेरा रूप मान लो, चाहे किसी और का रूप मान लो, राम का रूप मान लो, कृष्ण का रूप मान लो, एक को मानो, बहुत नहीं! कितनी निरपक्षता की तालीम है! कोई तुम को बन्धन में नहीं फंसाया जाता। मन में रहते हुए तो सहारे के बिना तुम्हारा गुज़ारा नहीं है न मेरा न दाता दयाल का न किसी और का, इसवास्ते गुरु के रूप का सहारा दिया गया है। इस मन, काल और माया के चक्कर में। और इस से पार जाना चाहते हो तो भई! प्रकाश और शब्द को पकड़ो। दो मार्ग हैं प्रवृत्ति मार्ग के लिये अपनी नीयत को साफ रखो। बस एक ही मज़हब, अपनी नीयत को साफ रखकर अपनी ज़ाती ग़रज, ज़ाती मतलब के लिये हेराफेरी, चार सौ बीस, धोखा फरेब मत

करो जहां तक तुम्हारा अपनी ज़ात का सम्बन्ध है। मन में रहते हो, मन का काम है छलागें मारना, इस को सुमिरन और ध्यान से रोको, चलते फिरते, उठते बैठते सुमिरन ध्यान करते रहो, अगर तुम नहीं भी पहुंचे तो तब भी तुम निकल जाओगे, मगर वहां पहुंचने के लिए :-

शब्द खुलेगा गुरु मेहर से, खैंचें सुरत गुरु बलवान।

दुनियां धोखे में है। लोग समझते हैं गुरु ने फूंक मार कर तुम्हारी सुरत को खैंचना है। केवल इस एक ख्याल को लेकर, तुम गुरुओं के दरबार में जाते हो और आशा करते हो कि कोई तुम्हारी सुरत को खैंच ले। भोले भाले लोगो! यह ग़लत है। गुरु बलवान! गुरु नाम है ज्ञान का, गुरु नाम है समझ का। जब से मुझ को यह तुम लोगों से समझ मिली, कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता, तो मुझ को ज्ञान मिल गया, मैं चूंकि पार जाना चाहता हूं तो मैं मज़बूर हूं इन रूपों रंगों व मन के चक्कर को छोड़ने के लिये, तो मेरे लिये गुरु बलवान कौन हुआ, जिसने मुझ को इस मन से बाहर निकालने की कोशिश की।

वो तुम हो, तुम्हारा अनुभव है। जो तुम ने बात बताई और जो मुझको ज्ञान प्राप्त हुआ वो तुम समझते हो बाबा फकीर ने खैंचनी है, मैं तभी तो कहता हूं ऐ भारत वर्ष के सत्संगियो ! तुम लोगों को हम गुरुओं ने बुरी तरह से बेवकूफ बनाया ! मगर तुम बेवकूफ बनने में मज़ा लेते हो, कईयों को तो लूटने में मज़ा है, कईयों को लुटवाने में मज़ा है।

पिछले दुसहरे के सत्संग में कोई बखतावर सिंह हवलदार था, वो सत्संग के बाद मेरे पास वहां गया होशियारपुर, कहने लगा। वर्ष हुए उसने किसी महा पुरुष से नाम लिया हुआ था, न शब्द खुला न प्रकाश खुला। पिछले दुसहरे के मौके पर मैं देहली गया। वहां सत्संग में बैठे हुए मेरे अन्तर प्रकाश भी खुल गया और शब्द भी हो गया। मैं अपने आप से पूछता हूं मैंने कुछ किया ? मैंने कुछ नहीं किया तुम कहोगे ओ बुढ्ढे ! तू तो गुरु मत पर पोचा फेर रहा है। मैं पोचा नहीं फेर रहा ! मैं सच्चे गुरुमत को ज़ाहिर कर रहा हूं। इस गुरुमत की आढ़ में हज़ारों आदमी पागल हो गये, इस खपत में। मैं उन को जो सचमुच अपने घर जाना चाहते हैं,

जिन को हकीकत की तलाश है और जो सच्चाई चाहते हैं, उन को सच्चाई बताता हूं, मगर अगर तुम को यह सच्चाई मिल भी जाये, जिसे मैं दे रहा हूं, तब भी तुम वहां नहीं पहुंच सकते क्यों ? तुम्हारे जो पहले साधन हैं। मन के एकाग्र करने के वो पूरे नहीं हैं। तुम ने साकार भक्ति नहीं की, साकार भक्ति है इश्के मजाज़ी। जब तक किसी को इश्के मिजाज़ी नहीं है, किसी साकार के साथ इतना प्रेम नहीं कि प्रेम करते करते उसका मन इकट्ठा हो जाये और निर्मल हो जाये, तब तक उस को यह ज्ञान मिल भी जाये, तब भी वो लाख कोशिश करे, उस की सुरत शब्द और प्रकाश में नहीं जा सकती। इस वास्ते दाता दयाल जी के बचन हैं :-

गुरु भक्ति है सब का सारा।
देखा सोचा समझा बचारा॥
मान मान यह बचन फकीरुवा।

अब मैं समझता हूं गुरु भक्ति क्या है। इश्के मिजाज़ी के लिये केवल गुरु की भक्ति नहीं है। एक औरत अपने पति के प्रेम में भी अपने मन को निर्मल

कर सकती है । एक देश भक्त अपने मान और प्रतिष्ठा को छोड़ कर देश की सेवा करता हुआ भी अपने मन को निर्मल कर सकता है । एक पितृ भक्त एक मातृ भक्त निष्काम प्रेम करता हुआ भी अपने मन को निर्मल कर सकता है । मन को निर्मल करने के लिये यह प्रारम्भिक साधन है । मैं जानता हूं मैं बहुत ऊंचा बोल रहा हूं, मगर यह मेरे बस में नहीं है । मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा, मैंने संतमत को साफ कर दिया अपनी ज़िन्दगी में । हकीकत असलीयत और सच्चाई को बिल्कुल खुले शब्दों में लोगों को व्यान कर चला, जिनके भाग्य में है वो समझकर अपने जीवन को *Practical life* में ढालेंगे ।

जिन पर दया आद करता की वो यह न्यामत पावे । शुरू शुरू में पहली श्रेणियों मैं गुरु भक्ति ज़रूरी है उसके साथ ही गुरु आज्ञा का पालन करना भी आवश्यक है । आज कल गुरु की आज्ञा का तो कोई पालन नहीं करता मगर भक्ति करते भी हैं तो मन के चक्कर में आकर अपने ग़लत प्रेम के रास्ते में आकर गुरुओं की सेवा करते हैं, गुरु कहता भी है कि

भई यह बात ऐसे न करो, तुम ऐसे करो, तुम ऐसे करो मगर वो जो उस के मन की तंरग है, उस में फंस कर उस को सेवा समझते हैं इसी वास्ते यह कहा गया है :-

गुरु जो कहें हित कर मान।
गुरु जो कहें चित्त धर ध्यान।

यह गुरु सेवा, गुरु जो हुक्म देता है वो तुम्हारे मन को काबू करने के लिए देता है। उदाहरण के तौर पर एक बात बताता हूं। हज़ूर महाराज राय सालिग राम साहिब बड़े भारे भक्त थे। दर्शन के बिना उनको चैन नहीं मिलता था स्वामी जी ने उनको बारह वर्ष के लिए बाहर नौकरी करने के लिए भेज दिया। वो चाहते भी दर्शन करने के लिये, तो वो कहते थे "नहीं ! तुम नहीं आ सकते मेरे पास"। बारह साल तक वो चिट्ठियां लिखते, प्रार्थना करते, स्वामी जी को कि वो बुलायें, मुझे आज्ञा दें, आगरे आते भी घर के लिये तो स्वामी जी के दर्शन करने की इजाज़त नहीं मिलती थी, हुक्म था "मत आओ" क्यों ? हज़ूर महाराज के मन में बाहर मुखी प्रेम ज्यादा था, उनके मन की लहर बाहर मुखी हो जाती

थी, उसको अन्तर मुखी करने लिये, मन की तरंग को रोकने के लिये, उन से बारह साल तप कराया। मैं बसरे बग़दाद होता था, एक बार लिखा, जब तक मैं न लिखूं, तुम ने चिट्ठी नहीं लिखनी, मैं प्रेमी था न, ताकि मेरे मन का जो ज़ज्वा उठता था, उस को रोकना था। किसी का मन बेकाबू होकर विषयों की तरफ भागता है, किसी का बेकाबू होकर दुनियां के कामों की तरफ भागता है, और किसी का गुरु के प्रेम की तरफ भागता है, क्या फरक है इस में ? केवल यही कि एक प्रेम उत्तम है और एक प्रेम निकृष्ट है, तो गुरु बेहतर जानता है, इस की घड़त कैसे होती है।

मेरे साथ भी कई आदमी लगे रहते हैं, कोई बात कहता हूं उसको मानते नहीं अपनी ज़िद करते हैं। तो यह हुक्म जो दिये जाते हैं यह इन्सान के मन को *Control* में करने के लिये दिये जाते हैं और कुछ नहीं, ताकि इन्सान मन की लहरों में न बह जाये, यह मन महा चंचल है, इसको एक तो इष्ट दो, दूसरे किसी पूरे कामल गुरु की हिदायत के अनुसार चलो ताकि तुम्हारा अकाज न हो।

अब तुम गृहस्थी हो, एक बात कह देता हूं, विश्वास रखो, वो सत्गुरु एक ताकत है। असली सत्गुरु तो नाम है ज्ञान का, अनुभव का, प्रकाश उस के चरण हैं और शब्द उसका रूप है। वहां तक तो तुम पहुंघ नहीं सकते, जिस रूप द्वारा तुम्हारी इच्छा है तुम विश्वास रखो मगर एक रूप पकड़ो। जो आज राम को, कल कृष्ण को, परसों हनुमान को मानते हैं वो न इस तरफ के न उस तरफ के। जिस तरह फोटो बोल पड़ती है। ऐसे ही एक इष्ट है, जिन का, वहां हनुमान भी बोल पड़ता है। जहां कृष्ण पर विश्वास है, वहां कृष्ण भी बोल पड़ता है, जिन का राम पर विश्वास है वहां राम भी बोल पड़ता है। यह सब तुम्हारे मन का चक्कर है। एक का सहारा पकड़ो, मैं नहीं कहता तुम मुझे पूजो, मैं पूजा कराने के लिये नहीं आया मैं आया हूं संसार के अज्ञान को दूर करने के लिये।

यह राज़ मैंने क्यों खोला ? देखते नहीं हो हिन्दु मुसलमान के झगड़े होते हैं, क्यों होते हैं ? क्योंकि यह सब काल मत के पुजारी हैं, न कोई राम बाहर से आता है, न कृष्ण बाहर से आता है, न मुहम्मद बाहर

से आता है, न देवी आती है, यह सब तुम्हारा मन है, जिस की ताकत से तुम्हारे सब काम होते रहते हैं :-

करम प्रधान विश्व कर राखा।
जो जस किन्हा तस सो फल चाख॥

मैंने इस ख्याल से इस राज़ को खोला है कि अगर कोई आदमी चाहता है कि हमारे देश में एकता हो जाये, जब तक यह असलीयत का ज्ञान संसार को नहीं होगा, यह हमारे मज़हबी द्वेष मज़हबी घृणा, मज़हबी झगड़े कभी खत्म हो ही नहीं सकते, इसलिये मैंने अपने मान, अपनी इज्जत और अपने धन धान्य की परवाह न करते हुये परम दयाल बन कर बड़ी सच्चाई निष्कपटता, निष्कामता और निःस्वार्थ पने से इस काम को किया है, अगर फर्ज करो कि मेरी ही ताकत है जो दूसरों के अन्दर बोलती है या दूसरों का काम करती है, तो ऐ भारत वासियो! मुझ को इस का कोई पता नहीं, मैं नहीं जानता, मुझे पता नहीं मैं अपने आप को भाग्यशाली समझता हूं कि मैं अहंकार में नहीं आया, खुदी में नहीं आया, जहां तक मेरी अपनी ज़ात का सम्बन्ध है मैं तुम को सच्ची बात बता चला, अगर कोई

समझता है कि मेरी तालीम ठीक है, इस तालीम से जीवों का कल्याण हो सकता है, दुनिया का भला हो सकता है और दुनियां को शान्ति मिल सकती है तो मेरे ख्यालात को Propogate करने के लिये जो सहायता चाहे कर सकता है, अगर इस ख्याल से देना चाहता है कि हां ! मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट हुआ और मैंने किसी की बीमारी दूर कर दी या किसी को मरते समय ले गया, तो मैं इन्कार करता हूं।

सब को राधास्वामी

राधास्वामी

शक्ति का श्रोत्र

लेखक :—कुबेर नाथ श्री वास्तव

तुम जानते हो तुम्हारे अन्दर शक्ति का श्रोत्र कहां है ? इसके हेतु बाहरी शक्ति का अध्ययन करना जरूरी है। चलो हम वहां चलें जहां बिजली यानि शक्ति उत्पादन की जाती है। हम लोग नदी की ओर बढ़े। चलते चलते हम लोग वहां पहुंचे जहां धारा दो पहाड़ों के बीच बड़े वेग से प्रवाहित है। यहां भूमि ढालू है। कैसा अच्छा दृश्य है। हम लोग ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते हैं नदी की धारा मन्द पड़ती जाती है। धारा का प्रवाह विल्कुल समाप्त हो गया। क्या देखते हैं कि एक विशाल बंध यानि बांध ने नदी की धारा के प्रवाह को रोक दिया है वहां अथाह जल है नदी का प्रवाह बजाय आगे बढ़ने के बांध से ढक्कर खाकर पीछे चला आता है।

जिसको यथा उचित प्रयोग करके इतनी बिजली उत्पादन की जाती है जिससे सारे देश में प्रकाश हवा व अन्य कामों के हेतु शक्ति प्राप्त की जाती है। हम बड़े तीव्र दृष्टि से देखते हैं कि विजली उत्पादन की मूल वस्तू क्या है तो यही पाते हैं कि सारा खेल बांध का है। और यदि बन्ध न हो तो सारा खेल फेल कर जाये।

हमारी देह की भी वही दशा है। इस देह में मन द्वारा शक्ति का श्रोत विचार के रूप में बड़े वेग से प्रवाहित है जो नदी के समान है। अगर इस विचार की धारा को रोक कर एकत्रित करने का रहस्य हाथ आ जाये तो तुम शक्ति प्राप्त करके अपनी मनोकामना भली भांति पूरी कर सकते हों इस लिए एक पूर्ण गुरु की खोज करो जो तुम्हारे अधिकार व संस्कार को निरख परख कर तुमको मन पर बंध लगाने की युक्ति बतावे अगर तुमको यह रहस्य हाथ आ गया तो तुम दीन व दुनियां दोनो में कुशल रहोगे।

फारस बेश का एक सूफी सन्त इसको निम्मांकित तौर पर वर्णन करता है।

चश्म बंद व गोश बंद व लव बन्द।
गर न बीनी सर्रे हक वर मां बखन्द॥

अर्थात आंख पर बंद लगाओ और मुँह पर बन्द लगाओ। यदि शक्ति के रहस्य को न समझ सको तो मुझसे पूछो।

लिखने को तो मैं इस रहस्य को लिख देता मगर गुरु की आज्ञा नहीं है क्योंकि एक दूसरा सूफी सन्त निम्नांकित गद्य लिखता है।

दूसरा सूफी कहता है कि :-

गोशरा नजदीक कुन का दूर नेस्त।
लेकिन हूं गुफ्सन जतु दस्तुर नेस्त॥

शक्ति के रहस्य को जानना दूर की बात नहीं है। प्रतिबन्ध यह है कि मनुष्य समाहित चित्त हो इसको अनाधिकारी मनुष्य से कहना विवर्जित है।

इसलिए मैं इसको स्पष्ट लिखने से विवश हूं।

मेरी करबद्ध प्रार्थना

भारत वासियो ! बचपन से किसी चीज़ की तलाश थी, जिस को मैं मालिक या राम समझता था, एक दृश्य द्वारा सन् १९०५ ईसवी में हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने सन्तमत दिया। इस सन्तमत के समझने में या जिस चीज़ की तलाश थी उसको पाने में तिरानवें साल का हो गया। अब वह चीज़ क्या निकली ? वह एक अवस्था है जहां मैं अपनी हस्ती को, हैपने को भूल जाता हूं जो कुछ बाकी रह जाता है उस को ब्यान करने के लिये शब्द नहीं मिलते। बस यह मिला मुझे।

क्योंकि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता, जगत कल्याण और साथ ही जीवों को भव सागर से पार करने का काम लगाया था जिसे आज उनतालीस साल से करता हुआ चला आ रहा हूं, मैं ने जो काम किया यह मेरे निज अनुभव के आधार पर है अथवा आप बीती को सामने रखते हुए किया।

गुरू आज्ञा का पालन करने के सिलसिले में मैंने मानवता मन्दिर की नींव रखी। जो कुछ मैंने कहा वह पुस्तकों अथवा मानव मन्दिर पत्रिका के रूप में आज कल प्रकाशित होता है। ब्राह्मण होने के नाते जो प्रकाशन मन्दिर से होता है उस का मूल्य नहीं रखा क्योंकि ब्राह्मण के लिये वेद बेचना पाप है, वेद नाम है ज्ञान का। पुस्तकें बड़ी होती हैं और दिन प्रति दिन मांग बड़ रही है। इस लिये मैं हाथ बांध कर कहूंगा कि जिन सज्जनों को मेरे अनुभव से सहमति न हो यूहिं किताबें मंगवाकर, क्योंकि ये मुफ्त मिलती हैं, मंन्दिर की हानी न करें।

अब किताबें अंग्रेजी और पंजाबी भाषा में भी मिलती हैं जो कि निम्न लिखित हैं।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ, 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6· ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ।

अंग्रेज़ी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans
2. A Word to Canadians
3. Manavta the true religion
4. Religious Research
5. Weight of Soul
6. Truth Always Wins
7. Essen e of Truth
8. Science of God Realization
9. True Sanatan Dharama or True Religion of Humanity
10. Jeewan Mukti
11. Art of happy living
12. Realization of Reality.
13. Master speaks to Foreigner
14. Key to Freedom.

जिन को ज़रूरत हो वह मंगवा सकते हैं हम बिना मूल्य भेज देंगे। मगर यह मुफ्त का काम कब तक चलेगा ? इस लिये जो सज्जन यह समझते हैं कि जो कुछ मैं ने इन किताबों में लिखा है इस में कुछ सच्चाई है, इस पर आचरण करने से इन्सान का पारिवारिक, सामाजिक और आत्मिक जीवन सुधर कर निर्वाण को प्राप्त हो सकता है तो यथा शक्ति मन्दिर की सहायता करें ताकि यह सब काम जारी रखा जा सके।

सरकार के आयकर के नियमानुसार ट्रस्ट वालों को साल में जितनी आय अथवा दान आता है वह उसी

साल में खर्च करना पड़ता है इसलिए मैंने जनता, विशेष कर गरीब रोगियों के इलाज में सहायता करने के लिये तीन हस्पताल एलोपैथिक, डेन्टल व होमियोपैथिक खोले हुये हैं मगर मुसीबत यह है कि बजाय गरीबों के अमीर आदमी अधिकतर इलाज कराने के लिये आते हैं। इसलिए अगर कोई सज्जन इस काम में सहायता करना चाहता है तो करे मगर यह विनती अवश्य करूंगा कि जो धनी लोग हैं वह यहां हस्पताल से मुफ्त दवाई न लें।

भारत वासियो ! मैंने जो कुछ किया निज स्वार्थ या संतमत के पक्ष में इसे सच्चा सिद्ध करने के लिये नहीं किया। मालिक के मिलने की तलाश थी जिस को हम ईश्वर परमेश्वर समझते थे। मेरा भाग्य अथवा दुर्भाग्य इस संतमत या राधास्वामीमत में ले आया। यहां इन संतों ने तमाम धर्मों, वेदान्त या सूफीमत तक का भी खण्डन किया हुआ है। आत्मा खण्डन सहन नहीं कर सकती थी इसलिये प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज ने काम दिया था। तुम ही सोचो राधास्वामीमत वालों की किताबों में संतों की इतनी

बड़ाई लिखी हुई है कि वह ईश्वर, परमेश्वर के पैदा करने वाले हैं बस, इसी एक राज को जानने के लिये मैंने अपना जीवन खो दिया कि संतमत वालों के पास क्या चीज़ है जो ईश्वर और परमेश्वर को भी पैदा करने वाले समझते हैं। दाता दयाल जी महाराज पर मेरा विश्वास तो नहीं टूटा मगर बाणी भेद नहीं देती थी। इसलिये प्रण किया था कि जो समझ में आयेगा बता जाऊंगा और दाता जी ने कहा था कि शिक्षा बदल जाना। हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने भी हुक्म दिया था कि निर्भय होकर काम कर जाना, सो कर चला, मेरा निज अनुभव मानता है कि संत बनना कोई सरल काम नहीं है। मुझ पर समय समय पर संतपते की हालत तारी होती है, चौबीस घण्टे नहीं। अब यह प्रार्थना है कि यह संसार मेरे लिए सदा के लिये लोप हो जाये और अपनी हस्ती खो कर ज़ात में समा जाऊं मगर यह उसकी इच्छा है।

निवेदन

कई सज्जन सहायता अथवा श्रद्धा के रूप में भेंट हज़ूर परम दयाल जी महाराज के नाम चैक या ड्राफट द्वारा भेजते हैं। इन रकमों को मन्दिर के हिसाब में तबदील करने के लिये हज़ूर को कष्ट उठाना पड़ता है। इसलिये निवेदन है कि भविष्य में चैक, ड्राफट और मनीआर्डर फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट के नाम भेजे जायें। कृपा होगी।

सेक्रेटरी :-
मानवता मन्दिर
होशियारपुर।